॥ श्रीहरिः ॥ 137

उपयोगी कहानियाँ

गीताप्रेस गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥ 137

उपयोगी कहानियाँ

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

निवेदन

इस पुस्तिकामें ३६ छोटी-छोटी बालकोपयोगी कहानियाँ हैं। कहानियाँ प्रायः सभी प्रचलित हैं। हमारे विद्वान् लेखकके द्वारा उनका नये ढंगसे सरल भाषामें संकलन कर दिया गया है। आशा है, इन कहानियोंसे हमारे बालक-बालिकाओंको जीवन-निर्माणमें उत्तम प्रेरणा प्राप्त होगी।

—हनुमानप्रसाद पोद्दार

॥ श्रीहरि: ॥

विषय-सूची

॥ श्रीहरिः ॥

उपयोगी कहानियाँ

१ भला आदमी

एक धनी पुरुषने एक मन्दिर बनवाया। मन्दिरमें भगवान्‌की पूजा करनेके लिये एक पुजारी रखा। मन्दिरके खर्चके लिये बहुत-सी भूमि, खेत और बगीचे मन्दिरके नाम लगाये। उन्होंने ऐसा प्रबन्ध किया था कि जो मन्दिरमें भूखे, दीन-दुःखी या साधु-संत आवें, वे वहाँ दो-चार दिन ठहर सकें और उनको भोजनके लिये भगवान्‌का प्रसाद मन्दिरसे मिल जाया करे। अब उन्हें एक ऐसे मनुष्यकी आवश्यकता हुई जो मन्दिरकी सम्पत्तिका प्रबन्ध करे और मन्दिरके सब कामोंको ठीक-ठीक चलाता रहे।

बहुत-से लोग उस धनी पुरुषके पास आये। वे लोग जानते थे कि यदि मन्दिरकी व्यवस्थाका काम मिल जाय तो वेतन अच्छा मिलेगा। लेकिन उस धनी पुरुषने सबको लौटा दिया। वह सबसे कहता था—'मुझे एक भला आदमी चाहिये, मैं उसको अपने-आप छाँट लूँगा।'

बहुत-से लोग मन-ही-मन उस धनी पुरुषको गालियाँ देते थे। बहुत लोग उसे मूर्ख या पागल बतलाते थे। लेकिन वह धनी पुरुष किसीकी बातपर ध्यान नहीं देता था। जब मन्दिरके

पट खुलते थे और लोग भगवान्‌के दर्शनके लिये आने लगते थे तब वह धनी पुरुष अपने मकानकी छतपर बैठकर मन्दिरमें आनेवाले लोगोंको चुपचाप देखा करता था।

एक दिन एक मनुष्य मन्दिरमें दर्शन करने आया। उसके कपड़े मैले और फटे हुए थे। वह बहुत पढ़ा-लिखा भी नहीं जान पड़ता था। जब वह भगवान्‌का दर्शन करके जाने लगा तब धनी पुरुषने उसे अपने पास बुलाया और कहा—'क्या आप इस मन्दिरकी व्यवस्था सँभालनेका काम स्वीकार करेंगे?'

वह मनुष्य बड़े आश्चर्यमें पड़ गया। उसने कहा—'मैं तो बहुत पढ़ा-लिखा नहीं हूँ। मैं इतने बड़े मन्दिरका प्रबन्ध कैसे कर सकूँगा?'

धनी पुरुषने कहा—'मुझे बहुत विद्वान् नहीं चाहिये। मैं तो एक भले आदमीको मन्दिरका प्रबन्धक बनाना चाहता हूँ।'

उस मनुष्यने कहा—'आपने इतने मनुष्योंमें मुझे ही क्यों भला आदमी माना?'

धनी पुरुष बोला—'मैं जानता हूँ कि आप भले आदमी हैं। मन्दिरके रास्तेमें एक ईंटका टुकड़ा गड़ा रह गया था और उसका एक कोना ऊपर निकला था। मैं इधर बहुत दिनोंसे देखता था कि उस ईंटके टुकड़ेकी नोकसे लोगोंको ठोकर लगती थी। लोग गिरते थे, लुढ़कते थे और उठकर चल देते थे। आपको उस टुकड़ेसे ठोकर लगी नहीं; किंतु आपने उसे

देखकर ही उखाड़ देनेका यत्न किया। मैं देख रहा था कि आप मेरे मजदूरसे फावड़ा माँगकर ले गये और उस टुकड़ेको खोदकर आपने वहाँकी भूमि भी बराबर कर दी।'

उस मनुष्यने कहा—'यह तो कोई बात नहीं है। रास्तेमें पड़े काँटे, कंकड़ और ठोकर लगनेयोग्य पत्थर, ईंटोंको हटा देना तो प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है।'

धनी पुरुषने कहा—'अपने कर्तव्यको जानने और पालन करनेवाले लोग ही भले आदमी होते हैं।'

वह मनुष्य मन्दिरका प्रबन्धक बन गया। उसने मन्दिरका बड़ा सुन्दर प्रबन्ध किया।

२ सच्चा लकड़हारा

मंगल बहुत सीधा और सच्चा था। वह बहुत गरीब था। दिनभर जंगलमें सूखी लकड़ी काटता और शाम होनेपर उनका गट्ठर बाँधकर बाजार जाता। लकड़ियोंको बेचनेपर जो पैसे मिलते थे, उनसे वह आटा, नमक आदि खरीदकर घर लौट आता था। उसे अपने परिश्रमकी कमाईपर पूरा संतोष था। एक दिन मंगल लकड़ी काटने जंगलमें गया। एक नदीके किनारे एक पेड़की सूखी डाल काटने वह पेड़पर चढ़ गया। डाल काटते समय उसकी कुल्हाड़ी लकड़ीमेंसे ढीली होकर निकल गयी और नदीमें गिर गयी। मंगल पेड़परसे उतर आया। नदीके पानीमें उसने कई बार डुबकी लगायी; किंतु उसे अपनी कुल्हाड़ी नहीं मिली। मंगल दुःखी होकर नदीके किनारे दोनों हाथोंसे सिर पकड़कर बैठ गया। उसकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। उसके पास दूसरी कुल्हाड़ी खरीदनेको पैसे नहीं थे। कुल्हाड़ीके बिना वह अपना और अपने परिवारका पालन कैसे करेगा, यह बड़ी भारी चिन्ता उसे सता रही थी।

वनके देवताको मंगलपर दया आ गयी। वे बालकका रूप धारण करके प्रकट हो गये और बोले—'भाई! तुम क्यों रो रहे हो?'

मंगलने उन्हें प्रणाम किया और कहा—'मेरी कुल्हाड़ी पानीमें गिर गयी। अब मैं लकड़ी कैसे काटूँगा और अपने बाल-बच्चोंका पेट कैसे भरूँगा?'

देवताने कहा—'रोओ मत! मैं तुम्हारी कुल्हाड़ी निकाल देता हूँ।'

देवताने पानीमें डुबकी लगायी और एक सोनेकी कुल्हाड़ी लेकर निकले। उन्होंने कहा—'तुम अपनी कुल्हाड़ी लो।'

मंगलने सिर उठाकर देखा और कहा—'यह तो किसी बड़े आदमीकी कुल्हाड़ी है। मैं गरीब आदमी हूँ। मेरे पास कुल्हाड़ी बनानेके लिये सोना कहाँसे आवेगा। यह तो सोनेकी कुल्हाड़ी है।'

देवताने दूसरी बार फिर डुबकी लगायी और चाँदीकी कुल्हाड़ी निकालकर वे मंगलको देने लगे। मंगलने कहा—'महाराज! मेरे भाग्य खोटे हैं। आपने मेरे लिये बहुत कष्ट उठाया, पर मेरी कुल्हाड़ी नहीं मिली। मेरी कुल्हाड़ी तो साधारण लोहेकी है।'

देवताने तीसरी बार डुबकी लगाकर मंगलकी लोहेकी कुल्हाड़ी निकाल दी। मंगल प्रसन्न हो गया। उसने धन्यवाद देकर अपनी कुल्हाड़ी ले ली। देवता मंगलकी सच्चाई और ईमानदारीसे बहुत प्रसन्न हुए। वे बोले—'मैं तुम्हारी सच्चाईसे प्रसन्न हूँ। तुम ये दोनों कुल्हाड़ियाँ भी ले जाओ।'

सोने और चाँदीकी कुल्हाड़ी पाकर मंगल धनी हो गया। वह अब लकड़ी काटने नहीं जाता था। उसके पड़ोसी घुरहूने मंगलसे पूछा कि 'तुम अब क्यों लकड़ी काटने नहीं जाते?' सीधे स्वभावके मंगलने सब बातें सच-सच बता दीं। लालची घुरहू सोने-चाँदीकी कुल्हाड़ीके लोभसे दूसरे दिन

अपनी कुल्हाड़ी लेकर उसी जंगलमें गया। उसने उसी पेड़पर लकड़ी काटना प्रारम्भ किया। जान-बूझकर अपनी कुल्हाड़ी उसने नदीमें गिरा दी और पेड़से नीचे उतरकर रोने लगा।

वनके देवता घुरहूके लालचका दण्ड देने फिर प्रकट हुए। घुरहूसे पूछकर उन्होंने नदीमें डुबकी लगाकर सोनेकी कुल्हाड़ी निकाली। सोनेकी कुल्हाड़ी देखते ही घुरहू चिल्ला उठा—'यही मेरी कुल्हाड़ी है।'

वनके देवताने कहा—'तू झूठ बोलता है, यह तेरी कुल्हाड़ी नहीं है।' देवताने वह कुल्हाड़ी पानीमें फेंक दी और वे अदृश्य हो गये। लालचमें पड़नेसे घुरहूकी अपनी कुल्हाड़ी भी खोयी गयी। वह रोता-पछताता घर लौट आया।

३ लालची राजा

यूरोपमें यूनान नामका एक देश है। यूनानमें पुराने समयमें मीदास नामका एक राजा राज्य करता था। राजा मीदास बड़ा ही लालची था। अपनी पुत्रीको छोड़कर उसे दूसरी कोई वस्तु संसारमें प्यारी थी तो बस सोना ही प्यारा था। वह रातमें सोते-सोते भी सोना इकट्ठा करनेका स्वप्न देखा करता था।

एक दिन राजा मीदास अपने खजानेमें बैठा सोनेकी ईंटें और अशर्फियाँ गिन रहा था। अचानक वहाँ एक देवदूत आया। उसने राजासे कहा—'मीदास! तुम बहुत धनी हो।'

मीदासने मुँह लटकाकर उत्तर दिया—'मैं धनी कहाँ हूँ। मेरे पास तो यह बहुत थोड़ा सोना है।'

देवदूत बोला—'तुम्हें इतने सोनेसे भी संतोष नहीं? कितना सोना चाहिये तुम्हें?'

राजाने कहा—'मैं तो चाहता हूँ कि मैं जिस वस्तुको हाथसे स्पर्श करूँ वही सोनेकी हो जाय।'

देवदूत हँसा और बोला—'अच्छी बात! कल सबेरेसे तुम जिस वस्तुको छुओगे, वही सोनेकी हो जायगी।'

उस दिन रातमें राजा मीदासको नींद नहीं आयी। बड़े सबेरे वह उठा। उसने एक कुर्सीपर हाथ रखा, वह सोनेकी हो गयी। एक मेजको छुआ, वह सोनेकी बन गयी। राजा मीदास प्रसन्नताके मारे उछलने और नाचने लगा। वह पागलोंकी

भाँति दौड़ता हुआ अपने बगीचेमें गया और पेड़ोंको छूने लगा। उसने फूल, पत्ते, डालियाँ, गमले छुए। सब सोनेके हो गये। सब चमाचम चमकने लगे। मीदासके पास सोनेका पार नहीं रहा।

दौड़ते-उछलते मीदास थक गया। उसे अभीतक यह पता ही नहीं लगा था कि उसके कपड़े भी सोनेके होकर बहुत भारी हो गये हैं। वह प्यासा था और भूख भी उसे लगी थी। बगीचेसे अपने राजमहल लौटकर एक सोनेकी कुर्सीपर वह बैठ गया। एक नौकरने उसके आगे भोजन और पानी लाकर रख दिया। लेकिन जैसे ही मीदासने भोजनको हाथ लगाया, सब भोजन सोना बन गया। उसने पानी पीनेके लिये गिलास उठाया तो गिलास और पानी सोना हो गया। मीदासके सामने सोनेकी रोटियाँ, सोनेके चावल, सोनेके आलू आदि रखे थे और वह भूखा था, प्यासा था। सोना चबाकर उसकी भूख नहीं मिट सकती थी।

मीदास रो पड़ा। उसी समय उसकी पुत्री खेलते हुए वहाँ आयी। अपने पिताको रोते देख वह पिताकी गोदमें चढ़कर उसके आँसू पोंछने लगी। मीदासने पुत्रीको अपनी छातीसे लगा लिया। लेकिन अब उसकी पुत्री वहाँ कहाँ थी। मीदासकी गोदमें तो उसकी पुत्रीकी सोनेकी इतनी वजनी मूर्ति थी कि उसे वह गोदमें उठाये भी नहीं रख सकता था।

बेचारा मीदास सिर पीट-पीटकर रोने लगा। देवदूतको दया आ गयी। वह फिर प्रकट हुआ। उसे देखते ही मीदास उसके पैरोंपर गिर पड़ा और गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करने लगा— 'आप अपना वरदान वापस लौटा लीजिये।'

देवदूतने पूछा—'मीदास! अब तुम्हें सोना नहीं चाहिये? बताओ तो एक गिलास पानी मूल्यवान् है या सोना? एक टुकड़ा रोटी भली या सोना?'

मीदासने हाथ जोड़कर कहा—'मुझे सोना नहीं चाहिये। मैं जान गया कि मनुष्यको सोना नहीं चाहिये। सोनेके बिना मनुष्यका कोई काम नहीं अटकता; किंतु एक गिलास पानी और एक टुकड़े रोटीके बिना मनुष्यका काम नहीं चल सकता। अब सोनेका लोभ नहीं करूँगा।'

देवदूतने एक कटोरेमें जल दिया और कहा—'इसे सबपर छिड़क दो।'

मीदासने वह जल अपनी पुत्रीपर, मेजपर, कुर्सीपर, भोजनपर, पानीपर और बगीचेके पेड़ोंपर छिड़क दिया। सब पदार्थ जैसे पहले थे, वैसे ही हो गये।

बिना विचारे काम मत करो

एक किसानने एक नेवला पाल रखा था। नेवला बहुत चतुर और स्वामिभक्त था। एक दिन किसान कहीं गया था। किसानकी स्त्रीने अपने छोटे बच्चेको दूध पिलाकर सुला दिया और नेवलेको वहीं छोड़कर वह घड़ा और रस्सी लेकर कुएँपर पानी भरने चली गयी।

किसानकी स्त्रीके चले जानेपर वहाँ एक काला साँप बिलमेंसे निकल आया। बच्चा पृथ्वीपर कपड़ा बिछाकर सुलाया गया था और साँप बच्चेकी ओर ही आ रहा था। नेवलेने यह देखा तो साँपके ऊपर टूट पड़ा। उसने साँपको काटकर टुकड़े-टुकड़े कर डाला और घरके दरवाजेपर किसानकी स्त्रीका रास्ता देखने गया।

किसानकी स्त्री घड़ा भरकर लौटी। उसने घरके बाहर दरवाजेपर नेवलेको देखा। नेवलेके मुखमें रक्त लगा देखकर उसने समझा कि इसने मेरे बच्चेको काटा है। दुःख और क्रोधके मारे भरा घड़ा उसने नेवलेपर पटक दिया। बेचारा नेवला कुचलकर मर गया।

वह स्त्री दौड़कर घरमें आयी। उसने देखा कि उसका बच्चा सुखसे सो रहा है और वहाँ एक काला साँप कटा पड़ा है। स्त्रीको अपनी भूलका पता लग गया। वह दौड़कर फिर

नेवलेके पास आयी और मरे नेवलेको गोदमें उठाकर रोने लगी। लेकिन अब उसके रोनेसे क्या लाभ? इसीलिये कहा है—

बिना बिचारे जो करै, सो पाछे पछताय।
काम बिगारे आपनो, जगमें होत हँसाय॥
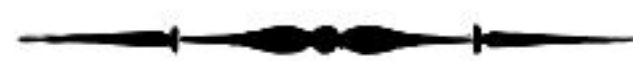
दयाका फल

बादशाह सुबुक्तगीन पहले बहुत गरीब था। वह एक साधारण सैनिक था। एक दिन वह बंदूक लेकर, घोड़ेपर बैठकर जंगलमें शिकार खेलने गया था। उस दिन उसे बहुत दौड़ना और हैरान होना पड़ा। बहुत दूर जानेपर उसे एक हिरनी अपने छोटे बच्चेके साथ दिखायी पड़ी। सुबुक्तगीनने उसके पीछे घोड़ा दौड़ा दिया।

हिरनी डरके मारे भागकर एक झाड़ीमें छिप गयी; लेकिन उसका छोटा बच्चा पीछे छूट गया। सुबुक्तगीनने हिरनीके बच्चेको पकड़ लिया और उसके पैर बाँधकर घोड़ेपर उसे लाद लिया। बहुत ढूँढ़नेपर भी जब उसे हिरनी नहीं मिली तो उस बच्चेको लेकर ही वह लौट पड़ा।

हिरनीने देखा कि उसके बच्चेको शिकारी बाँधकर लिये जा रहा है। वह अपने बच्चेके मोहसे झाड़ीसे निकल आयी और सुबुक्तगीनके घोड़ेके पीछे-पीछे दौड़ने लगी। दूर जाकर सुबुक्तगीनने पीछे देखा। अपने पीछे हिरनीको दौड़ते देख उसे आश्चर्य हुआ और दया आ गयी। उसने उसके बच्चेके पैर खोलकर घोड़ेसे उतार दिया। हिरनी प्रसन्न होकर अपने बच्चेको लेकर भाग गयी।

उस दिन घर लौटकर जब रातमें सुबुक्तगीन सोया तो उसने एक स्वप्न देखा। उससे कोई देवदूत कह रहा था—

'सुबुक्तगीन! तूने आज एक गरीब हिरनीपर जो दया की है, उससे प्रसन्न होकर परमात्माने तेरा नाम बादशाहोंकी सूचीमें लिख लिया है। तू एक दिन बादशाह बनेगा।'

सुबुक्तगीनका स्वप्न सच्चा था। वह आगे चलकर बादशाह हुआ। एक हिरनीपर दया करनेका उसे यह फल मिला। जो जीवोंपर दया करता है, उसपर भगवान् अवश्य प्रसन्न होते हैं।

पिता और पुत्र

एक जवान बाप अपने छोटे पुत्रको गोदमें लिये बैठा था। कहींसे उड़कर एक कौआ उनके सामने खपरैलपर बैठ गया। पुत्रने पितासे पूछा—'यह क्या है?'

पिता—'कौआ है।'

पुत्रने फिर पूछा—'यह क्या है?'

पिताने फिर कहा—'कौआ है।'

पुत्र बार-बार पूछता था—'क्या है?'

पिता स्नेहसे बार-बार कहता था—'कौआ है।'

कुछ वर्षोंमें पुत्र बड़ा हुआ और पिता बूढ़ा हो गया। एक दिन पिता चटाईपर बैठा था। घरमें कोई उसके पुत्रसे मिलने आया। पिताने पूछा—'कौन आया है?'

पुत्रने नाम बता दिया। थोड़ी देरमें कोई और आया और पिताने फिर पूछा। इस बार झल्लाकर पुत्रने कहा—'आप चुपचाप पड़े क्यों नहीं रहते। आपको कुछ करना-धरना तो है नहीं। कौन आया? कौन गया? यह टायँ-टायँ दिनभर क्यों लगाये रहते हैं?'

पिताने लम्बी साँस खींची। हाथसे सिर पकड़ा। बड़े दुःखभरे स्वरमें धीरे-धीरे वह कहने लगा—'मेरे एक बार पूछनेपर अब तुम क्रोध करते हो और तुम सैकड़ों बार पूछते थे एक ही बात—'यह क्या है?' मैंने कभी तुम्हें झिड़का नहीं। मैं बार-बार तुम्हें बताता—'कौआ है।'

अपने माता-पिताका तिरस्कार करनेवाले ऐसे लड़के बहुत बुरे माने जाते हैं। तुम सदा इस बातका ध्यान रखो कि माता-पिताने तुम्हारे पालन-पोषणमें कितना कष्ट उठाया है और तुमसे कितना स्नेह किया है।
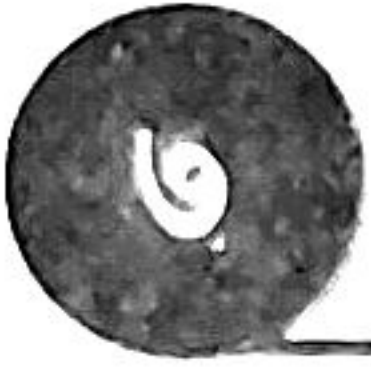
ईश्वर सब कहीं है

दातादीन अपने लड़के गोपालको नित्य शामको सोनेसे पहले कहानियाँ सुनाया करता था। एक दिन उसने गोपालसे कहा—'बेटा! एक बात कभी मत भूलना कि भगवान् सब कहीं हैं।'

गोपालने इधर-उधर देखकर पूछा—'पिताजी! भगवान् सब कहीं हैं? वह मुझे तो कहीं दीखते नहीं।'

दातादीनने कहा—'हम भगवान्‌को देख नहीं सकते; किंतु वे हैं सब कहीं और हमारे सब कामोंको देखते रहते हैं।'

गोपालने पिताकी बात याद कर ली। कुछ दिन बाद अकाल पड़ा। दातादीनके खेतोंमें कुछ हुआ नहीं। एक दिन गोपालको लेकर रातके अँधेरेमें वह गाँवसे बाहर गया। वह दूसरे किसानके खेतमेंसे चोरीसे एक गट्ठा अन्न काटकर घर लाना चाहता था। गोपालको मेड़पर खड़ा करके उसने कहा—'तुम चारों ओर देखते रहो, कोई इधर आवे या देखे तो मुझे बता देना।'

जैसे ही दातादीन खेतमें अन्न काटने बैठा गोपालने कहा—'पिताजी! रुकिये।'

दातादीनने पूछा—'क्यों, कोई देखता है क्या?'

गोपाल—'हाँ, देखता है।'

दातादीन खेतसे निकलकर मेड़पर आया। उसने चारों ओर देखा। जब कोई कहीं न दीखा तो उसने पुत्रसे पूछा—'कहाँ? कौन देखता है?'

गोपाल—'आपने ही तो कहा था कि ईश्वर सब कहीं है और सबके सब काम देखता है। तब वह आपको खेत काटते क्या नहीं देखेगा?' दातादीन पुत्रकी बात सुनकर लज्जित हो गया। चोरीका विचार छोड़कर वह घर लौट आया।

मित्रकी सलाह

दुर्गादास था तो धनी किसान; किंतु बहुत आलसी था। वह न अपने खेत देखने जाता था, न खलिहान। अपनी गाय-भैंसोंकी भी वह खोज-खबर नहीं रखता था। और न अपने घरके सामानोंकी ही देख-भाल करता था। सब काम वह नौकरोंपर छोड़ देता था। उसके आलस और कुप्रबन्धसे उसके घरकी व्यवस्था बिगड़ गयी। उसको खेतीमें हानि होने लगी। गायोंके दूध-घीसे भी उसे कोई अच्छा लाभ नहीं होता था।

एक दिन दुर्गादासका मित्र हरिश्चन्द्र उसके घर आया। हरिश्चन्द्रने दुर्गादासके घरका हाल देखा। उसने यह समझ लिया कि समझानेसे आलसी दुर्गादास अपना स्वभाव नहीं छोड़ेगा। इसलिये उसने अपने मित्र दुर्गादासकी भलाई करनेके लिये उससे कहा—'मित्र! तुम्हारी विपत्ति देखकर मुझे बड़ा दुःख हो रहा है। तुम्हारी दरिद्रताको दूर करनेका एक सरल उपाय मैं जानता हूँ।'

दुर्गादास—'कृपा करके वह उपाय तुम मुझे बता दो। मैं उसे अवश्य करूँगा।'

हरिश्चन्द्र—'सब पक्षियोंके जागनेसे पहले ही मानसरोवरपर रहनेवाला एक सफेद हंस पृथ्वीपर आता है। वह दो पहर दिन चढ़े लौट जाता है। यह तो पता नहीं कि

वह कब कहाँ आवेगा; किन्तु जो उसका दर्शन कर लेता है, उसको कभी किसी बातकी कमी नहीं होती।'

दुर्गादास—'कुछ भी हो, मैं उस हंसका दर्शन अवश्य करूँगा।'

हरिश्चन्द्र चला गया। दुर्गादास दूसरे दिन बड़े सबेरे उठा। वह घरसे बाहर निकला और हंसकी खोजमें खलिहानमें गया। वहाँ उसने देखा कि एक आदमी उसके ढेरसे गेहूँ अपने ढेरमें डालनेके लिये उठा रहा है। दुर्गादासको देखकर वह लज्जित हो गया और क्षमा माँगने लगा।

खलिहानसे वह घर लौट आया और गोशालामें गया। वहाँ-का रखवाला गायका दूध दुहकर अपनी स्त्रीके लोटेमें डाल

रहा था। दुर्गादासने उसे डाँटा। घरपर जलपान करके हंसकी खोजमें वह फिर निकला और खेतपर गया। उसने देखा कि खेतपर अबतक मजदूर आये ही नहीं थे। वह वहाँ रुक गया। जब मजदूर आये तो उन्हें देरसे आनेका उसने उलाहना दिया। इस प्रकार वह जहाँ गया, वहीं उसकी कोई-न-कोई हानि रुक गयी।

सफेद हंसकी खोजमें दुर्गादास प्रतिदिन सबेरे उठने और घूमने लगा। अब उसके नौकर ठीक काम करने लगे। उसके यहाँ चोरी होनी बंद हो गयी। पहिले वह रोगी रहता था, अब उसका स्वास्थ्य भी ठीक हो गया। जिस खेतसे उसे दस मन अन्न मिलता था, उससे अब पचीस मन मिलने लगा। गोशालासे दूध बहुत अधिक आने लगा।

एक दिन फिर दुर्गादासका मित्र हरिश्चन्द्र उसके घर आया। दुर्गादासने कहा—'मित्र! सफेद हंस तो मुझे अबतक नहीं दीखा; किंतु उसकी खोजमें लगनेसे मुझे लाभ बहुत हुआ है।'

हरिश्चन्द्र हँस पड़ा और बोला—'परिश्रम करना ही वह सफेद हंस है। परिश्रमके पंख सदा उजले होते हैं। जो परिश्रम न करके अपना काम नौकरोंपर छोड़ देता है, वह हानि उठाता है और जो स्वयं परिश्रम करता है तथा जो स्वयं नौकरोंकी देखभाल करता है, वह सम्पत्ति और सम्मान पाता है।'

स्वर्गके दर्शन
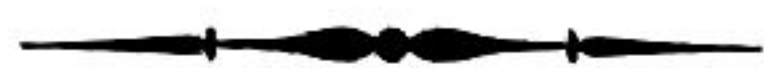
लक्ष्मीनारायण बहुत भोला लड़का था। वह प्रतिदिन रातमें सोनेसे पहले अपनी दादीसे कहानी सुनानेको कहता था। दादी उसे नागलोक, पाताल, गन्धर्वलोक, चन्द्रलोक, सूर्यलोक आदिकी कहानियाँ सुनाया करती थी। एक दिन दादीने उसे स्वर्गका वर्णन सुनाया। स्वर्गका वर्णन इतना सुन्दर था कि उसे सुनकर लक्ष्मीनारायण स्वर्ग देखनेके लिये हठ करने लगा।

दादीने उसे बहुत समझाया कि मनुष्य स्वर्ग नहीं देख सकता; किंतु लक्ष्मीनारायण रोने लगा। रोते-रोते ही वह सो गया। उसे स्वप्नमें दिखायी पड़ा कि एक चम-चम चमकते देवता उसके पास खड़े होकर कह रहे हैं—'बच्चे ! स्वर्ग देखनेके लिये मूल्य देना पड़ता है। तुम सर्कस देखने जाते हो तो टिकट देते हो न? स्वर्ग देखनेके लिये भी तुम्हें उसी प्रकार रुपये देने पड़ेंगे।'

स्वप्नमें ही लक्ष्मीनारायण सोचने लगा कि मैं दादीसे रुपये माँगूँगा। लेकिन देवताने कहा—'स्वर्गमें तुम्हारे रुपये नहीं चलते। यहाँ तो भलाई और पुण्यकर्मोंका रुपया चलता है। अच्छा, तुम यह डिबिया अपने पास रखो। जब तुम कोई अच्छा काम करोगे तो एक रुपया इसमें आ जायगा और जब कोई बुरा काम करोगे तो एक रुपया इसमेंसे उड़ जायगा। जब यह डिबिया भर जायगी, तब तुम स्वर्ग देख सकोगे।'

जब लक्ष्मीनारायणकी नींद टूटी तो उसने अपने सिरहाने सचमुच एक डिबिया देखी। डिबिया लेकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उस दिन उसकी दादीने उसे एक पैसा दिया। पैसा लेकर वह घरसे निकला। एक रोगी भिखारी उससे पैसा माँगने लगा। लक्ष्मीनारायण भिखारीको बिना पैसा दिये भाग जाना चाहता था, इतनेमें उसने अपने अध्यापकको सामनेसे आते देखा। उसके अध्यापक उदार लड़कोंकी बहुत प्रशंसा किया करते थे। उन्हें देखकर लक्ष्मीनारायणने भिखारीको पैसा दे दिया। अध्यापकने उसकी पीठ ठोंकी और प्रशंसा की।

घर लौटकर लक्ष्मीनारायणने वह डिबिया खोली; किंतु वह खाली पड़ी थी। इस बातसे लक्ष्मीनारायणको बहुत दुःख हुआ। वह रोते-रोते सो गया। सपनेमें उसे वही देवता फिर दिखायी पड़े और बोले—'तुमने अध्यापकसे प्रशंसा पानेके लिये पैसा दिया था, सो प्रशंसा मिल गयी। अब रोते क्यों हो? किसी लाभकी आशासे जो अच्छा काम किया जाता है, वह तो व्यापार है, वह पुण्य थोड़े ही है।'

दूसरे दिन लक्ष्मीनारायणको उसकी दादीने दो आने पैसे दिये। पैसे लेकर उसने बाजार जाकर दो संतरे खरीदे। उसका साथी मोतीलाल बीमार था। बाजारसे लौटते समय वह अपने मित्रको देखने उसके घर चला गया। मोतीलालको देखने उसके घर वैद्य आये थे। वैद्यजीने दवा देकर

मोतीलालकी मातासे कहा—'इसे आज संतरेका रस देना।' मोतीलालकी माता बहुत गरीब थी। वह रोने लगी और बोली—'मैं मजदूरी करके पेट भरती हूँ। इस समय बेटेकी बीमारीमें कई दिनसे काम करने नहीं जा सकी। मेरे पास संतरे खरीदनेके लिये एक भी पैसा नहीं है।'

लक्ष्मीनारायणने अपने दोनों संतरे मोतीलालकी माँको दिये। वह लक्ष्मीनारायणको आशीर्वाद देने लगी। घर आकर जब लक्ष्मीनारायणने अपनी डिबिया खोली तो उसमें दो रुपये चमक रहे थे।

एक दिन लक्ष्मीनारायण खेलमें लगा था। उसकी छोटी बहिन वहाँ आयी और उसके खिलौनोंको उठाने लगी। लक्ष्मीनारायणने उसे रोका। जब वह न मानी तो उसने उसे पीट दिया। बेचारी लड़की रोने लगी। इस बार जब उसने डिबिया खोली तो देखा कि उसके पहलेके इकट्ठे कई रुपये उड़ गये हैं। अब उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ। उसने आगे कोई बुरा काम न करनेका पक्का निश्चय कर लिया।

मनुष्य जैसे काम करता है, वैसा उसका स्वभाव हो जाता है। जो बुरे काम करता है, उसका स्वभाव बुरा हो जाता है। उसे फिर बुरा काम करनेमें ही आनन्द आता है। जो अच्छा काम करता है, उसका स्वभाव अच्छा हो जाता है। उसे बुरा काम करनेकी बात भी बहुत बुरी लगती है। लक्ष्मीनारायण पहले रुपयेके लोभसे अच्छा काम करता था।

धीरे-धीरे उसका स्वभाव ही अच्छा काम करनेका हो गया। अच्छा काम करते-करते उसकी डिबिया रुपयोंसे भर गयी। स्वर्ग देखनेकी आशासे प्रसन्न होता, उस डिबियाको लेकर वह अपने बगीचेमें पहुँचा।

लक्ष्मीनारायणने देखा कि बगीचेमें पेड़के नीचे बैठा हुआ एक बूढ़ा साधु रो रहा है। वह दौड़ता हुआ साधुके पास गया और बोला—'बाबा! आप क्यों रो रहे हैं?'

साधु बोला—'बेटा! जैसी डिबिया तुम्हारे हाथमें है, वैसी ही एक डिबिया मेरे पास थी। बहुत दिन परिश्रम करके मैंने उसे रुपयोंसे भरा था। बड़ी आशा थी कि उसके रुपयोंसे स्वर्ग देखूँगा; किंतु आज गंगाजीमें स्नान करते समय वह डिबिया पानीमें गिर गयी।'

लक्ष्मीनारायणने कहा—'बाबा! आप रोओ मत। मेरी डिबिया भी भरी हुई है। आप इसे ले लो।'

साधु बोला—'तुमने इसे बड़े परिश्रमसे भरा है, तुम्हें इसे देनेसे दुःख होगा।'

लक्ष्मीनारायणने कहा—'मुझे दुःख नहीं होगा बाबा! मैं तो लड़का हूँ। मुझे अभी पता नहीं कितने दिन जीना है। मैं तो ऐसी कई डिबिया रुपये इकट्ठे कर सकता हूँ। आप बूढ़े हो गये हैं। आप अब दूसरी डिबिया पता नहीं भर पावेंगे या नहीं। इसलिये आप मेरी डिबिया ले लीजिये।'

साधुने डिबिया लेकर लक्ष्मीनारायणके नेत्रोंपर हाथ फेर दिया। लक्ष्मीनारायणके नेत्र बंद हो गये। उसे स्वर्ग दिखायी पड़ने लगा—ऐसा सुन्दर स्वर्ग कि दादीने जो स्वर्गका वर्णन किया था, वह वर्णन तो स्वर्गके एक कोनेका भी ठीक वर्णन नहीं था।

जब लक्ष्मीनारायणने नेत्र खोले तो साधुके बदले स्वप्नमें दिखायी पड़नेवाला वही देवता उसके सामने प्रत्यक्ष खड़ा था। देवताने कहा—'बेटा! जो लोग अच्छे काम करते हैं, स्वर्ग उनका घर बन जाता है। तुम इसी प्रकार जीवनमें भलाई करते रहोगे तो अन्तमें स्वर्गमें पहुँच जाओगे।'

देवता इतना कहकर वहीं अदृश्य हो गये।

सबसे बड़ा पुण्यात्मा

काशी प्राचीन समयसे प्रसिद्ध है। संस्कृत-विद्याका वह पुराना केन्द्र है। उसे भगवान् विश्वनाथकी नगरी या विश्वनाथपुरी भी कहा जाता है। विश्वनाथजीका वहाँ बहुत प्राचीन मन्दिर है। एक दिन विश्वनाथजीके पुजारीने स्वप्न देखा कि भगवान् विश्वनाथ उससे मन्दिरमें विद्वानों तथा धर्मात्मा लोगोंकी सभा बुलानेको कह रहे हैं। पुजारीने दूसरे दिन सबेरे ही सारे नगरमें इसकी घोषणा करवा दी।

काशीके सभी विद्वान्, साधु और दूसरे पुण्यात्मा दानी लोग भी गंगाजीमें स्नान करके मन्दिरमें आये। सबने विश्वनाथजीको जल चढ़ाया, प्रदक्षिणा की और सभा-मण्डपमें तथा बाहर खड़े हो गये। उस दिन मन्दिरमें बहुत भीड़ थी। सबके आ जानेपर पुजारीने सबसे अपना स्वप्न बताया। सब लोग 'हर हर महादेव' की ध्वनि करके शंकरजीकी प्रार्थना करने लगे।

जब भगवान्‌की आरती हो गयी, घड़ी-घण्टेके शब्द बंद हो गये और सब लोग प्रार्थना कर चुके, तब सबने देखा कि मन्दिरमें अचानक खूब प्रकाश हो गया है। भगवान् विश्वनाथकी मूर्तिके पास एक सोनेका पत्र पड़ा था, जिसपर बड़े-बड़े रत्न जड़े हुए थे। उन रत्नोंकी चमकसे ही मन्दिरमें

प्रकाश हो रहा था। पुजारीने वह रत्न-जटित स्वर्णपत्र उठा लिया। उसपर हीरोंके अक्षरोंमें लिखा था—'सबसे बड़े दयालु और पुण्यात्माके लिये यह विश्वनाथजीका उपहार है ।'

पुजारी बड़े त्यागी और सच्चे भगवद्भक्त थे । उन्होंने वह पत्र उठाकर सबको दिखाया। वे बोले—'प्रत्येक सोमवारको

यहाँ विद्वानोंकी सभा होगी। जो सबसे बड़ा पुण्यात्मा और दयालु अपनेको सिद्ध कर देगा, उसे यह स्वर्णपत्र दिया जायगा।'

देशमें चारों ओर यह समाचार फैल गया। दूर-दूरसे तपस्वी, त्यागी, व्रत करनेवाले, दान करनेवाले लोग काशी आने लगे। एक ब्राह्मणने कई महीने लगातार चान्द्रायण-व्रत किया था। वे उस स्वर्णपत्रको लेने आये। लेकिन जब स्वर्णपत्र उन्हें दिया गया, उनके हाथमें जाते ही वह मिट्टीका हो गया। उसकी ज्योति नष्ट हो गयी। लज्जित होकर उन्होंने स्वर्णपत्र लौटा दिया। पुजारीके हाथमें जाते ही वह फिर सोनेका हो गया और उसके रत्न चमकने लगे।

एक बाबूजीने बहुत-से विद्यालय बनवाये थे। कई स्थानोंपर सेवाश्रम चलाते थे। दान करते-करते उन्होंने अपना लगभग सारा धन खर्च कर दिया था। बहुत-सी संस्थाओंको वे सदा दान देते थे। अखबारोंमें उनका नाम छपता था। वे भी स्वर्णपत्र लेने आये, किंतु उनके हाथमें जाकर भी वह मिट्टीका हो गया। पुजारीने उनसे कहा—'आप पद, मान या यशके लोभसे दान करते जान पड़ते हैं।' नामकी इच्छासे होनेवाला दान सच्चा दान नहीं है।

इसी प्रकार बहुत-से लोग आये, किंतु कोई भी स्वर्णपत्र पा नहीं सका। सबके हाथोंमें पहुँचकर वह मिट्टीका हो जाता था। कई महीने बीत गये। बहुत-से लोग स्वर्णपत्र पानेके लोभसे भगवान् विश्वनाथके मन्दिरके पास ही दान-पुण्य करने लगे। लेकिन स्वर्णपत्र उन्हें भी मिला नहीं।

एक दिन एक बूढ़ा किसान भगवान् विश्वनाथके दर्शन करने आया। वह देहाती किसान था। उसके कपड़े मैले और फटे थे। वह केवल विश्वनाथजीका दर्शन करने आया था। उसके पास कपड़ेमें बँधा थोड़ा सत्तू और एक फटा कम्बल था। मन्दिरके पास लोग गरीबोंको कपड़े और पूड़ी-मिठाई बाँट रहे थे; किंतु एक कोढ़ी मन्दिरसे दूर पड़ा कराह रहा था। उससे उठा नहीं जाता था। उसके सारे शरीरमें घाव थे। वह भूखा था, किंतु उसकी ओर कोई देखतातक नहीं था। बूढ़े किसानको कोढ़ीपर दया आ गयी। उसने अपना सत्तू उसे खानेको दे दिया और अपना कम्बल उसे उढ़ा दिया। वहाँसे वह मन्दिरमें दर्शन करने आया।

मन्दिरके पुजारीने अब नियम बना लिया था कि सोमवारको जितने यात्री दर्शन करने आते थे, सबके हाथमें एक बार वह स्वर्णपत्र रखते थे। बूढ़ा किसान जब विश्वनाथजीका दर्शन करके मन्दिरसे निकला, पुजारीने स्वर्णपत्र उसके हाथमें रख दिया। उसके हाथमें जाते ही स्वर्णपत्रमें जड़े रत्न दुगुने प्रकाशसे चमकने लगे। सब लोग बूढ़ेकी प्रशंसा करने लगे।

पुजारीने कहा—'यह स्वर्णपत्र तुम्हें विश्वनाथजीने दिया है। जो निर्लोभ है, जो दीनोंपर दया करता है, जो बिना किसी स्वार्थके दान करता है और दुःखियोंकी सेवा करता है, वही सबसे बड़ा पुण्यात्मा है।'

११ मक्खीका लोभ

एक व्यापारी अपने ग्राहकको शहद दे रहा था। अचानक व्यापारीके हाथसे छूटकर शहदका बर्तन गिर पड़ा। बहुत-सा शहद भूमिपर ढुलक गया। जितना शहद व्यापारी उठा सकता था, उतना उसने ऊपर-ऊपरसे उठा लिया; लेकिन कुछ शहद भूमिमें गिरा रह गया।

बहुत-सी मक्खियाँ शहदकी मिठासके लोभसे आकर उस शहदपर बैठ गयीं। मीठा-मीठा शहद उन्हें बहुत अच्छा लगा। जल्दी-जल्दी वे उसे चाटने लगीं। जबतक उनका पेट भर नहीं गया, वे शहद चाटनेमें लगी रहीं।

जब मक्खियोंका पेट भर गया, उन्होंने उड़ना चाहा। लेकिन उनके पंख शहदसे चिपक गये थे। उड़नेके लिये वे जितना छटपटाती थीं, उतने ही उनके पंख चिपकते जाते थे। उनके सारे शरीरमें शहद लगता जाता था।

बहुत-सी मक्खियाँ शहदमें लोट-पोट होकर मर गयीं। बहुत-सी पंख चिपकनेसे छटपटा रही थीं। लेकिन दूसरी नयी-नयी मक्खियाँ शहदके लोभसे वहाँ आती-जाती थीं। मरी और छटपटाती मक्खियोंको देखकर भी वे शहद खानेका लोभ छोड़ नहीं पाती थीं।

मक्खियोंकी दुर्गति और मूर्खता देखकर व्यापारी बोला—'जो लोग जीभके स्वादके लोभमें पड़ जाते हैं, वे
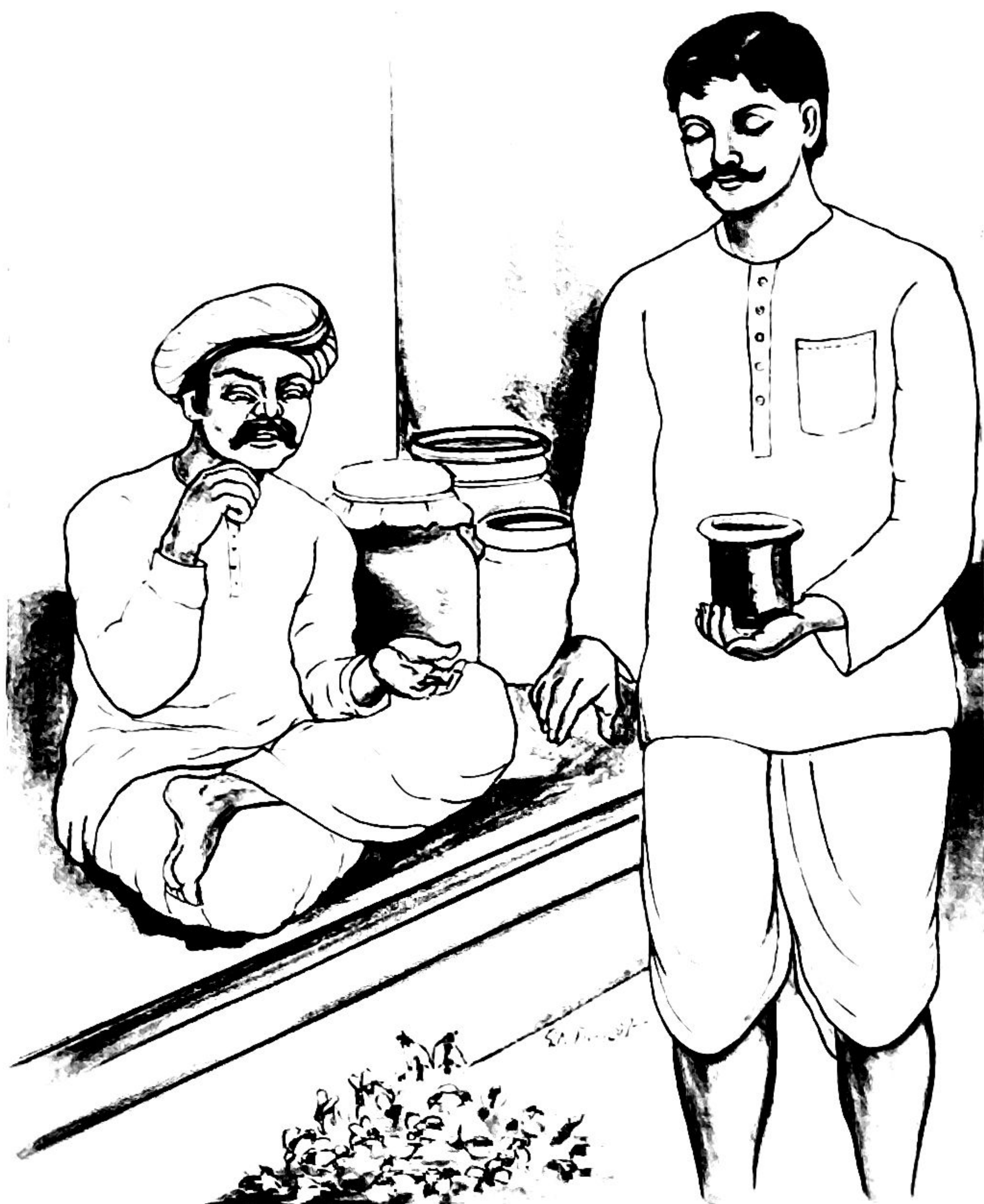
इन मक्खियोंके समान ही मूर्ख होते हैं । स्वादका थोड़ी देरका सुख उठानेके लोभसे वे अपना स्वास्थ्य नष्ट कर देते हैं, रोगी बनकर छटपटाते हैं और शीघ्र मृत्युके ग्रास बनते हैं ।'

मेलकी शक्ति

मातादीनके पाँच पुत्र थे—शिवराम, शिवदास, शिवलाल, शिवसहाय और शिवपूजन । ये पाँचों लड़के परस्पर झगड़ा किया करते थे । छोटी-सी बातपर भी आपसमें 'तू-तू', 'मैं-मैं' करने लगते और गुत्थमगुत्थी कर लेते थे।

मातादीन अपने लड़कोंके झगड़ेसे बहुत ऊब गया था । उसने एक दिन उन्हें समझानेके विचारसे पास बुलाया । पहलेसे पतली-पतली सूखी पाँच टहनियोंका उसने एक छोटा गट्ठर बना लिया था । पुत्रोंसे उसने कहा—'तुममेंसे जो इन टहनियोंके गट्ठरको तोड़ देगा, उसे एक रुपया पुरस्कार मिलेगा ।'

पाँचों लड़के झगड़ने लगे कि गट्ठरको वे पहले तोड़ेंगे। उन्हें डर था कि यदि दूसरा भाई पहले तोड़ देगा तो रुपया उसीको मिल जायगा । मातादीनने कहा—'पहले छोटे भाई शिवपूजनको तोड़ने दो ।'

शिवपूजनने गट्ठर उठा लिया और जोर लगाने लगा। दाँत दबाकर, आँख मीचकर बहुत जोर उसने लगाया। सिरपर पसीना आ गया; किंतु गट्ठरकी टहनियाँ नहीं टूटीं। उसने गट्ठर शिवसहायको दे दिया । उसने भी जोर लगाया, पर तोड़ नहीं सका । इस प्रकार सब लड़कोंने बारी-बारीसे गट्ठर लिया और जोर लगाया; किंतु कोई उसे तोड़नेमें सफल नहीं हुआ।

मातादीनने गट्ठर खोलकर एक-एक टहनी सब लड़कोंको दे दी। इस बार सभीने टहनियोंको पटापट तोड़ दिया। अब मातादीन बोला—'देखा! ये टहनियाँ जबतक एक साथ थीं तुममेंसे कोई उन्हें तोड़ नहीं सका और जब ये अलग-अलग हो गयीं तो तुमने सरलतासे सबको तोड़ डाला। इसी प्रकार यदि तुमलोग आपसमें झगड़ते और अलग रहोगे तो दूसरे लोग तुमलोगोंको तंग करेंगे और दबा लेंगे। लेकिन यदि तुमलोग परस्पर मेलसे रहोगे तो कोई तुमसे शत्रुता करनेका साहस ही नहीं करेगा।'

मातादीनके लड़कोंने उसी दिनसे आपसमें झगड़ना छोड़ दिया। वे मेलसे रहने लगे।

वैद्यजी भगाये गये

देवीसहायका लड़का भगवतीप्रसाद बीमार हो गया था। वह गरमीकी दोपहरीमें घरसे चुपचाप आम चुनने भाग गया और वहाँ उसे लू लग गयी। उसे जोरसे ज्वर चढ़ा था। देवीसहायने वैद्यजीको अपने लड़केकी चिकित्साके लिये बुलाया।

वैद्यजीने आकर लड़केकी नाड़ी देखी और कहा—'इसे लू लगी है। यह बड़ा चंचल जान पड़ता है। दोपहरीमें घरसे बाहर जानेका क्या काम था? यह बहुत बुरी बात है। जो लड़के अपने बड़ोंकी बात नहीं मानते, वे ऐसे ही दुःख भोगते हैं।'

वैद्यजी उपदेश देते जाते थे और लड़केको डाँटते जाते थे। देवीसहायको यह बात अच्छी नहीं लगी। उन्होंने कहा—'वैद्यजी! मैंने आपको बुलाकर भूल की। आप अपनी फीस लीजिये और जाइये। मैं अपने लड़केकी चिकित्सा किसी अन्य वैद्यसे करा लूँगा। आप तो बीमार लड़केको डाँटकर और दुःखी कर रहे हैं।'

वैद्यजी बेचारे लज्जित होकर चले गये। जो दुःखमें पड़ा है, उसे उस समय उसकी भूलें बताकर और उपदेश देकर अधिक दुःखी नहीं करना चाहिये। उस समय तो उससे सहानुभूति दिखाना और उसकी सेवा करना ही उचित है।
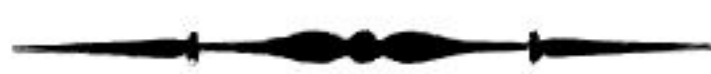
दो टट्टू

एक व्यापारीके पास दो टट्टू थे। वह उनपर सामान लादकर पहाड़ोंपर बसे गाँवमें ले जाकर बेचा करता था। एक बार उनमेंसे एक टट्टू कुछ बीमार हो गया। व्यापारीको पता नहीं था कि उसका एक टट्टू बीमार है। उसे गाँवमें बेचनेके लिये नमक, गुड़, दाल, चावल आदि ले जाना था। उसने दोनों टट्टुओंपर बराबर-बराबर सामान लाद लिया और चल पड़ा।

ऊँचे-नीचे पहाड़ी रास्तेपर चलनेमें बीमार टट्टूको बहुत कष्ट होने लगा। उसने दूसरे टट्टूसे कहा—'आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मैं अपनी पीठपर रखा एक बोरा गिरा देता हूँ, तुम यहीं खड़े रहो। हमारा स्वामी वह बोरा तुम्हारे ऊपर रख देगा। मेरा भार कुछ कम हो जायगा तो मैं तुम्हारे साथ चला चलूँगा। तुम आगे चले जाओगे तो गिरा बोरा फिर मेरी पीठपर रखा जायगा।'

दूसरा टट्टू बोला—'मैं तुम्हारा भार ढोनेके लिये क्यों खड़ा रहूँ? मेरी पीठपर क्या कम भार लदा है? मैं अपने हिस्सेका ही भार ढोऊँगा।'

बीमार टट्टू चुप हो गया। लेकिन उसकी तबीयत अधिक खराब हो रही थी। चलते समय एक पत्थरके टुकड़ेसे ठोकर खाकर वह गिर पड़ा और गड्ढेमें लुढ़कता चला गया।

व्यापारी अपने एक टट्टूके मर जानेसे बहुत दुःखी हुआ। वह थोड़ी देर वहाँ खड़ा रहा। फिर उसने उस टट्टूके बचे हुए बोरे भी दूसरे टट्टूकी पीठपर लाद दिये। अब तो वह टट्टू पछताने लगा और मन-ही-मन कहने लगा—'यदि मैं अपने साथीका कहना मानकर उसका एक बोरा ले लेता तो यह सब भार मुझे क्यों ढोना पड़ता।'

संकटमें पड़े अपने साथीकी जो सहायता नहीं करते उन्हें पीछे पछताना ही पड़ता है।

ब्रह्माजीके थैले

इस संसारको बनानेवाले ब्रह्माजीने एक बार मनुष्यको अपने पास बुलाकर पूछा—'तुम क्या चाहते हो?'

मनुष्यने कहा—'मैं उन्नति करना चाहता हूँ, सुख-शान्ति चाहता हूँ और चाहता हूँ कि सब लोग मेरी प्रशंसा करें।'

ब्रह्माजीने मनुष्यके सामने दो थैले धर दिये। वे बोले—'इन थैलोंको ले लो। इनमेंसे एक थैलेमें तुम्हारे

पड़ोसीकी बुराइयाँ भरी हैं। उसे पीठपर लाद लो। उसे सदा बंद रखना। न तुम देखना न दूसरेको दिखाना। दूसरे थैलेमें तुम्हारे दोष भरे हैं। उसे सामने लटका लो और बार-बार खोलकर देखा करो।

मनुष्यने दोनों थैले उठा लिये। लेकिन उससे एक भूल हो गयी। उसने अपनी बुराइयोंका थैला पीठपर लाद लिया और उसका मुँह कसकर बंद कर दिया। अपने पड़ोसीकी बुराइयोंसे भरा थैला उसने सामने लटका लिया। उसका मुँह खोलकर वह उसे देखता रहता है और दूसरोंको भी दिखाता रहता है। इससे उसने जो वरदान माँगे थे, वे भी उलटे हो गये। वह अवनति करने लगा। उसे दुःख और अशान्ति मिलने लगी। सब लोग उसे बुरा बताने लगे।

तुम मनुष्यकी वह भूल सुधार लो तो तुम्हारी उन्नति होगी। तुम्हें सुख-शान्ति मिलेगी। जगत्‌में तुम्हारी प्रशंसा होगी। तुम्हें करना यह है कि अपने पड़ोसी और परिचितोंके दोष देखना बंद कर दो और अपने दोषोंपर सदा दृष्टि रखो।

१६ सच्ची जीत

एक गाँवमें एक किसान रहता था। उसका नाम था शेरसिंह। शेरसिंह शेर-जैसा भयंकर और अभिमानी था। वह थोड़ी-सी बातपर बिगड़कर लड़ाई कर लेता था। गाँवके लोगोंसे सीधेमुँह बात नहीं करता था। न तो वह किसीके घर जाता था और न रास्तेमें मिलनेपर किसीको प्रणाम करता था। गाँवके किसान भी उसे अहंकारी समझकर उससे नहीं बोलते थे।

उसी गाँवमें एक दयाराम नामका किसान आकर बस गया। वह बहुत सीधा और भला आदमी था। सबसे नम्रतासे बोलता था। सबकी कुछ-न-कुछ सहायता किया करता था। सभी किसान उसका आदर करते थे और अपने कामोंमें उससे सलाह लिया करते थे।

गाँवके किसानोंने दयारामसे कहा—'भाई दयाराम! तुम कभी शेरसिंहके घर मत जाना। उससे दूर ही रहना। वह बहुत झगड़ालू है।'

दयारामने हँसकर कहा—'शेरसिंहने मुझसे झगड़ा किया तो मैं उसे मार ही डालूँगा।'

दूसरे किसान भी हँस पड़े। वे जानते थे कि दयाराम बहुत दयालु है। वह किसीको मारना तो दूर, किसीको गालीतक

नहीं दे सकता। लेकिन यह बात किसीने शेरसिंहसे कह दी। शेरसिंह क्रोधसे लाल हो गया। वह उसी दिनसे दयारामसे झगड़नेकी चेष्टा करने लगा। उसने दयारामके खेतमें अपने बैल छोड़ दिये। बैल बहुत-सा खेत चर गये; किंतु दयारामने उन्हें चुपचाप खेतसे हाँक दिया।

शेरसिंहने दयारामके खेतमें जानेवाली पानीकी नाली तोड़ दी। पानी बहने लगा। दयारामने आकर चुपचाप नाली बाँध दी। इसी प्रकार शेरसिंह बराबर दयारामकी हानि करता रहा; किंतु दयारामने एक बार भी उसे झगड़नेका अवसर नहीं दिया।

एक दिन दयारामके यहाँ उनके सम्बन्धीने लखनऊके मीठे खरबूजे भेजे। दयारामने सभी किसानोंके घर एक-एक खरबूजा भेज दिया; लेकिन शेरसिंहने उसका खरबूजा यह कहकर लौटा दिया कि 'मैं भिखमंगा नहीं हूँ। मैं दूसरोंका दान नहीं लेता।'

बरसात आयी। शेरसिंह एक गाड़ी अनाज भरकर दूसरे गाँवसे आ रहा था। रास्तेमें एक नालेके कीचड़में उसकी गाड़ी फँस गयी। शेरसिंहके बैल दुबले थे। वे गाड़ीको कीचड़मेंसे निकाल नहीं सके। जब गाँवमें इस बातकी खबर पहुँची तो सब लोग बोले—'शेरसिंह बड़ा दुष्ट है। उसे रातभर नालेमें पड़े रहने दो।'

लेकिन दयारामने अपने बलवान् बैल पकड़े और नालेकी ओर चल पड़ा। लोगोंने उसे रोका और कहा—'दयाराम! शेरसिंहने तुम्हारी बहुत हानि की है। तुम तो कहते थे कि

मुझसे लड़ेगा तो उसे मार ही डालूँगा। फिर तुम आज उसकी सहायता करने क्यों जाते हो?'

दयाराम बोला—'मैं आज सचमुच उसे मार डालूँगा। तुम लोग सबेरे उसे देखना।'

जब शेरसिंहने दयारामको बैल लेकर आते देखा तो गर्वसे बोला—'तुम अपने बैल लेकर लौट जाओ। मुझे किसीकी सहायता नहीं चाहिये।'

दयारामने कहा—'तुम्हारे मनमें आवे तो गाली दो, मनमें आवे मुझे मारो, इस समय तुम संकटमें हो। तुम्हारी गाड़ी
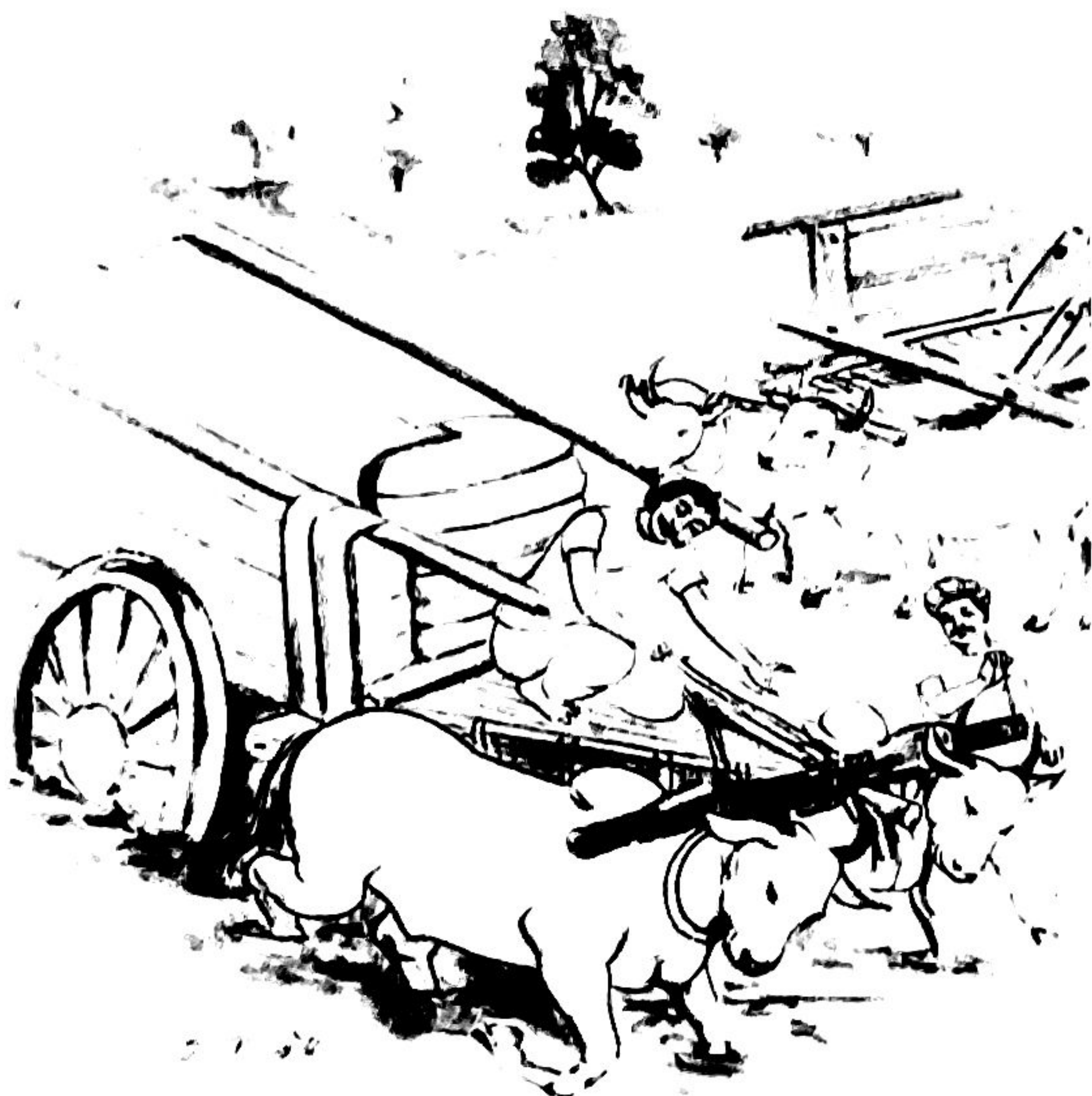
फँसी है और रात होनेवाली है। मैं तुम्हारी बात इस समय नहीं मान सकता।'

दयारामने शेरसिंहके बैलोंको खोलकर अपने बैल गाड़ीमें जोत दिये। उसके बलवान् बैलोंने गाड़ीको खींचकर नालेसे बाहर कर दिया। शेरसिंह गाड़ी लेकर घर आ गया। उसका दुष्ट स्वभाव उसी दिनसे बदल गया। वह कहता था—'दयारामने अपने उपकारके द्वारा मुझे मार ही दिया। अब मैं वह अहंकारी शेरसिंह कहाँ रहा।' अब वह सबसे नम्रता और प्रेमका व्यवहार करने लगा। बुराईको भलाईसे जीतना ही सच्ची जीत है। दयारामने सच्ची जीत पायी।

१७ मूर्खराज

बादशाह अकबर बीरबलको बहुत मानते थे। बीरबल बड़े बुद्धिमान् थे और अपनी विनोदपूर्ण बातोंसे बादशाहको प्रसन्न रखते थे। अकबर और बीरबलके विनोदकी बहुत-सी बातें प्रचलित हैं। उनमेंसे कुछ बातें बड़े कामकी हैं। एक घटना हम यहाँ सुना रहे हैं।

एक बार बादशाह अपने राजमहलमें गये। बादशाहकी सबसे प्यारी बेगम उस समय अपनी किसी सखीसे बातें कर रही थीं। बादशाह अचानक जाकर खड़े हो गये। बेगम उठ खड़ी हुईं और हँसती हुई बोलीं—'आइये मूर्खराज!'

बादशाहको बहुत बुरा लगा। लेकिन बेगमने इससे पहले कभी बादशाहका अपमान नहीं किया था। बादशाह जानते थे

कि बेगम बुद्धिमती हैं। वे बिना कारणके ऐसी बात नहीं कह सकतीं। लेकिन बादशाह यह नहीं जान सके कि बेगमने उन्हें मूर्खराज क्यों कहा। बेगमसे पूछना बादशाहको अच्छा नहीं लगा। थोड़ी देर वहाँ रहकर वे अपने कमरेमें चले आये।

बादशाह उदास बैठे थे। उसी समय बीरबल उनके पास आये। बीरबलको देखते ही बादशाहने कहा—'आइये मूर्खराज!'

बीरबल हँसकर बोले—'जी मूर्खराजजी!'

बादशाहने आँख चढ़ाकर कहा—'बीरबल! तुम मुझे मूर्खराज क्यों कहते हो?'

बीरबलने कहा—'मनुष्य पाँच प्रकारसे मूर्ख कहलाता है। यदि दो व्यक्ति अकेलेमें बातें कर रहे हों और वहाँ कोई बिना बुलाये या बिना सूचना दिये जा खड़ा हो तो उसे मूर्ख कहा जाता है। दो व्यक्ति बातचीत कर रहे हों और उसमें तीसरा व्यक्ति बीचमें पड़कर उनकी बात पूरी हुए बिना बोलने लगे तो वह भी मूर्ख कहा जाता है। कोई अपनेसे कुछ कह रहा हो तो उसकी पूरी बात सुने बिना बीचमें बोलनेवाला भी मूर्ख माना जाता है। जो बिना अपराध और बिना दोषके दूसरोंको गाली दे और दोष लगाये, वह भी मूर्ख है। इसी प्रकार जो मूर्खके पास जाय और मूर्खोंका संग करे, वह भी मूर्ख है।'

बादशाह बीरबलके उत्तरसे बहुत प्रसन्न हुए।

तुम इन बातोंको स्मरण कर लो। कभी ऐसी कोई भूल तुमसे नहीं होनी चाहिये कि लोग तुम्हें भी मूर्खराज कह सकें।

जाओ और आओ

एक गाँवमें एक धनी मनुष्य रहता था। उसका नाम भैरोमल था। भैरोमलके पास बहुत खेत थे। उसने बहुत-से नौकर और मजदूर रख छोड़े थे। भैरोमल बहुत सुस्त और आलसी था। वह कभी अपने खेतोंको देखने नहीं जाता था। अपने मजदूर और नौकरोंको भेजकर ही वह काम कराता था।

मजदूर और नौकर मनमाना काम करते थे। वे लोग खेतपर तो थोड़ी देर काम करते थे, बाकी घर बैठे रहते, इधर-उधर घूमते या गप्पें उड़ाया करते थे। खेत न तो ठीकसे जोते जाते थे, न सींचे जाते थे और न उनमें ठीक खाद ही पड़ती थी। खेतोंमें बीज भी ठीकसे नहीं पड़ते थे और उनकी घास तो कोई निकालता ही नहीं था। इसका फल यह हुआ कि उपज धीरे-धीरे घटने लगी। थोड़े दिनोंमें भैरोमल गरीब होने लगा।

उसी गाँवमें रामप्रसाद नामक एक दूसरा किसान था। उसके पास खेत नहीं थे। वह भैरोमलके ही कुछ खेत लेकर खेती करता था; किंतु था परिश्रमी। अपने मजदूरोंके साथ वह खेतपर जाता था, डटकर परिश्रम करता था। उसके खेत भली प्रकार जोते और सींचे जाते थे। अच्छी खाद पड़ती थी। घास निकाली जाती थी और बीज भी समयपर बोये जाते थे। उसके घरके लोग भी खेतपर काम करते थे। उसके खेतमें

उपज अच्छी होती थी। लगान देकर और खर्च करके भी वह बहुत-सा अन्न बचा लेता था। थोड़े दिनोंमें रामप्रसाद धनी हो गया।

जब भैरोमल बहुत गरीब हो गया, उसके ऊपर महाजनोंका ऋण हो गया तो उसे अपने खेत बेचनेकी आवश्यकता जान पड़ी। यह समाचार पाकर रामप्रसाद उसके पास आया और बोला—'मैंने सुना है कि आप अपने खेत बेचना चाहते हैं। कृपा करके आप मेरे हाथ अपने खेत बेचें। मैं दूसरोंसे कम मूल्य नहीं दूँगा।'

भैरोमलने आश्चर्यसे पूछा—'भाई रामप्रसाद! मेरे पास इतने खेत थे, फिर भी मैं ऋणी हो गया हूँ; किंतु तुम्हारे पास धन कहाँसे आ गया है? तुम तो मेरे ही थोड़े-से खेत लेकर खेती करते हो। उन खेतोंकी लगान भी तुम्हें देनी पड़ती है और घरका भी काम चलाना पड़ता है। मेरे खेत खरीदनेके लिये तुम्हें रुपये किसने दिये?'

रामप्रसादने कहा—'मुझे रुपये किसीने नहीं दिये। रुपये तो मैंने खेतोंकी उपजसे ही बचाकर इकट्ठे किये हैं। आपकी खेती और मेरी खेतीमें एक अन्तर है। आप नौकरों-मजदूरों आदि सबसे काम करनेके लिये 'जाओ-जाओ' कहते हैं, इससे आपकी सम्पत्ति भी चली गयी। मैं मजदूरों और नौकरोंसे पहले काम करनेको तैयार होकर उन्हें अपने साथ काम करनेके लिये सदा 'आओ' कहकर बुलाता हूँ। इससे मेरे यहाँ सम्पत्ति आती है।'

अब भैरोमल ठीक बात समझ गया। उसने थोड़े-से खेत रामप्रसादके हाथ बेचकर अपना ऋण चुका दिया और बाकी खेतोंमें परिश्रमपूर्वक खेती करने लगा। थोड़े ही दिनोंमें उसकी दशा सुधर गयी। वह फिर सुखी और सम्पन्न हो गया।

खरगोश और मेढक

एक बार कुछ खरगोश गरमीके दिनोंमें झरबेरीकी एक सूखी झाड़ीमें इकट्ठे हुए। खेतोंमें उन दिनों अन्न न होनेसे वे सब भूखे थे और इन दिनों सुबह और शामको गाँवसे बाहर घूमनेवालोंके साथ आनेवाले कुत्ते भी उन्हें बहुत तंग करते थे। मैदानकी झाड़ियाँ सूख गयी थीं। कुत्तोंके दौड़नेपर खरगोशोंको छिपनेका स्थान बहुत हैरान होनेपर मिलता था। इन सब दुःखोंसे वे सब बेचैन हो गये थे।

एक खरगोशने कहा—'ब्रह्माजीने हमारी जातिके साथ बड़ा अन्याय किया है। हमको इतना छोटा और दुर्बल बनाया। हमें उन्होंने न तो हिरन-जैसे सींग दिये, न बिल्ली-जैसे तेज पंजे। अपने शत्रुओंसे बचनेका हमारे पास कोई उपाय नहीं। सबके सामनेसे हमें भागना पड़ता है। सब ओरसे सारी विपत्ति हमलोगोंके सिरपर ही सृष्टिकर्ताने डाल दी है।

दूसरे खरगोशने कहा—'मैं तो अब इस दुःख और आशंकासे भरे जीवनसे घबरा गया हूँ। मैंने तालाबमें डूबकर मर जानेका निश्चय किया है।'

तीसरा बोला—'मैं भी मर जाना चाहता हूँ। अब और दुःख मुझसे नहीं सहा जाता। मैं अभी तालाबमें कूदने जाता हूँ।'

'हम सब तुम्हारे साथ चलते हैं। हम सब एक साथ रहे हैं

तो साथ ही मरेंगे।' सब खरगोश बोल उठे। सब एक साथ तालाबकी ओर चल पड़े।

तालाबके पानीसे निकलकर बहुत-से मेढक किनारेपर बैठे थे। जब खरगोशोंके आनेकी आहट उन्हें मिली तो वे छपाछप पानीमें कूद पड़े। मेढकोंको डरकर पानीमें कूदते

देख खरगोश रुक गये। एक खरगोश बोला—'भाइयो! प्राण देनेकी आवश्यकता नहीं है, आओ लौट चलें। जब ब्रह्माकी सृष्टिमें हमसे भी छोटे और हमसे भी डरनेवाले जीव रहते हैं और जीते हैं, तब हम जीवनसे क्यों निराश हों ?'

उसकी बात सुनकर खरगोशोंने आत्महत्याका विचार छोड़ दिया और लौट गये। जब तुमपर विपत्ति आये और तुम घबरा उठो तो यह देखो कि संसारमें कितने अधिक लोग तुमसे भी अधिक दुःखी, दरिद्र, रोगी और संकटग्रस्त हैं। तुम उनसे कितनी अच्छी दशामें हो। फिर तुम्हें क्यों घबराना चाहिये।

बादशाह और माली

फारस देशका बादशाह नौशेरवाँ अपनी न्यायप्रियताके लिये बहुत प्रसिद्ध हो गया था। वह बहुत दानी भी था। एक दिन वह अपने मन्त्रियोंके साथ घूमने निकला। उसने देखा कि एक बगीचेमें एक बहुत बूढ़ा माली अखरोटके पेड़ लगा रहा है। बादशाह उस बगीचेमें गया। उसने मालीसे पूछा—'तुम यहाँ नौकर हो या यह तुम्हारा ही बगीचा है?'

माली—'मैं नौकरी नहीं करता। यह बगीचा मेरे ही बाप-दादोंका लगाया है ।'

बादशाह—'तुम ये अखरोटके पेड़ लगा रहे हो। क्या तुम समझते हो कि इनका फल खानेके लिये तुम जीवित रहोगे?'

अखरोटका पेड़ लगानेके बीस बरस बाद फलता है, यह बात प्रसिद्ध है। बूढ़े मालीने बादशाहकी बात सुनकर कहा—'मैं अबतक दूसरेके लगाये पेड़ोंके बहुत फल खा चुका हूँ। इसलिये मुझे भी दूसरोंके लिये पेड़ लगाने चाहिये। अपने फल खानेकी आशासे ही पेड़ लगाना तो स्वार्थपरता है।'

बादशाह मालीके उत्तरसे बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसे पुरस्कारमें दो अशर्फियाँ दीं।

नेकीका बदला

एक वृक्षकी डालपर एक कबूतर बैठा था। वह वृक्ष नदीके किनारे था। कबूतरने डालपर बैठे-बैठे नीचे देखा कि नदीके पानीमें एक चींटी बहती जा रही है। वह बेचारी बार-बार किनारे आना चाहती है; किंतु पानीकी धारा उसे बहाये लिये जा रही है। ऐसा लगता है कि चींटी थोड़े क्षणोंमें ही पानीमें डूबकर मर जायगी। कबूतरको दया आ गयी। उसने चोंचसे एक पत्ता तोड़कर चींटीके पास पानीमें गिरा दिया। चींटी उस पत्तेपर चढ़ गयी। पत्ता बहकर किनारे लग गया। पानीसे बाहर आकर चींटी कबूतरकी प्रशंसा करने लगी।

उसी समय एक बहेलिया वहाँ आया और पेड़के नीचे छिपकर बैठ गया। कबूतरने बहेलियेको नहीं देखा। बहेलिया अपना बाँस कबूतरको फँसा लेनेके लिये ऊपर बढ़ाने लगा। चींटीने यह सब देखा तो पेड़की ओर दौड़ी। वह बोल सकती तो अवश्य पुकारकर कबूतरको सावधान कर देती; किंतु बोल तो वह सकती नहीं थी। अपने प्राण बचानेवाले कबूतरकी रक्षा करनेका उसने विचार कर लिया था। पेड़के नीचे पहुँचकर चींटी बहेलियेके पैरपर चढ़ गयी और उसने उसकी जाँघमें पूरे जोरसे काट लिया।

चींटीके काटनेसे बहेलिया चमक गया। उसका बाँस हिल

गया। इससे पेड़के पत्ते खड़क गये और कबूतर सावधान होकर उड़ गया।

जो संकटमें पड़े लोगोंकी सहायता करता है, उसपर संकट आनेपर उसकी सहायताका प्रबन्ध भगवान् अवश्य कर देते हैं।

अतिथि-सत्कार

यह कथा पुराणमें आयी है। चिड़ियोंको फँसाकर उन्हें बेचनेवाला एक बहेलिया था। वह दिनभर अपना गोंद लगा बाँस लिये वनमें घूमा करता था और चिड़ियोंको फँसाया करता था। एक बार सर्दीके दिनोंमें बहेलिया बड़े सबेरे जंगलमें गया। उस दिन उसे कोई चिड़िया नहीं मिली। एक जंगलसे दूसरे जंगलमें भटकते हुए उसे पूरा दिन बीत गया। वह इतनी दूर निकल गया था कि घर नहीं लौट सकता था। अँधेरा होनेपर एक पेड़के नीचे रात बिता देनेके विचारसे वह बैठ गया।

उस दिन दिनमें वर्षा हुई थी। ओले पड़े थे । सर्दी खूब बढ़ गयी थी। बहेलियेके पास कपड़े नहीं थे। वह जंगलमें रात बितानेकी बात सोचकर घरसे नहीं चला था। हवा जोरसे चलने लगी। बहेलिया थर-थर काँपने लगा। जाड़ेके मारे उसके दाँत कट-कट बजने लगे।

जिस पेड़के नीचे बहेलिया बैठा था, उस पेड़के ऊपर कबूतरका एक जोड़ा घोंसला बनाकर रहता था। बहेलियेकी दुर्दशा देखकर कबूतरने अपनी कबूतरीसे कहा—'यद्यपि यह हमलोगोंका शत्रु है; किंतु आज हमारे यहाँ अतिथि हुआ है। इसकी सेवा करना हमलोगोंका धर्म है। अभी तो रात प्रारम्भ हुई है। जाड़ा अभी बढ़ेगा। यदि इसे ऐसे ही रहना पड़ा तो

रातभरमें यह जाड़ेके मारे मर जायगा। हमलोगोंको इसकी मृत्युका पाप लगेगा। इसका जाड़ा दूर करनेका उपाय करना चाहिये।'

कबूतरी और कबूतरने अपना घोंसला नीचे गिरा दिया। थोड़े और तिनके चोंचमें दबा-दबाकर लाकर गिराये। फिर कबूतरी उड़ गयी और दूरसे एक जलती लकड़ी चोंचमें पकड़कर ले आयी। वह लकड़ी उसने तिनकोंपर डाल दी। तिनके जलने लगे। बहेलियाने आसपाससे इकट्ठी करके और लकड़ियाँ आगमें डाल दी। उसका जाड़ा दूर हो गया।

बहेलिया दिनभरका भूखा था। अब वह अग्निके प्रकाशमें इधर-उधर देखने लगा कि कहीं कुछ मिल जाय तो खाकर भूख मिटावें। उसका मुख भूखसे सूख रहा था। कबूतरीने यह देखा तो वह कबूतरसे बोली—'अतिथि तो साक्षात् भगवान्‌का स्वरूप होता है। जिसके घरसे अतिथि भूखा चला जाता है, उसके सब पुण्य नष्ट हो जाते हैं। यह बहेलिया आज हमलोगोंका अतिथि है और भूखा है। हमारे पास इसकी भूख मिटानेको और तो कुछ है नहीं, मैं इस जलती आगमें कूदती हूँ, जिससे मेरा मांस खाकर यह अपना पेट भर ले।'

कबूतरी इतना कहकर पेड़से अग्निमें कूद पड़ी। कबूतरने अपने मनमें कहा—'इस अतिथिका पेट कबूतरीके थोड़ेसे मांससे कैसे भरेगा! मैं भी आगमें कूदकर अपना मांस इसे दूँगा।' कबूतर भी आगमें कूद पड़ा।

उसी समय आकाशमें बाजे बजने लगे। फूलोंकी वर्षा

होने लगी। देवताओंका विमान उतरा और उसमें बैठकर देवताओंके समान रूप धारण करके कबूतर और कबूतरी उस दिव्य लोकको चले गये, जहाँ बड़े-बड़े यज्ञ करनेवाले राजा तथा बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी बड़ी कठिनाईसे पहुँच पाते हैं।

किसान और सारस

एक किसान चिड़ियोंसे बहुत तंग आ गया था। उसका खेत जंगलके पास था। उस जंगलमें पक्षी बहुत थे। किसान जैसे ही खेतमें बीज बोकर, पाटा चलाकर घर जाता, वैसे ही झुंड-के-झुंड पक्षी उसके खेतमें आकर बैठ जाते और मिट्टी कुरेद-कुरेदकर बोये बीज खाने लगते। किसान पक्षियोंको उड़ाते-उड़ाते थक गया। उसके बहुत-से बीज चिड़ियोंने खा लिये। बेचारेको दुबारा खेत जोतकर दूसरे बीज डालने पड़े।

इस बार किसान एक बहुत बड़ा जाल ले आया। उसने पूरे खेतपर जाल बिछा दिया। बहुत-से पक्षी खेतमें बीज चुगने आये और जालमें फँस गये। एक सारस पक्षी भी उस जालमें फँस गया।

जब किसान जालमें फँसी चिड़ियोंको पकड़ने लगा तो सारसने कहा—'आप मुझपर कृपा कीजिये। मैंने आपकी कोई हानि नहीं की है। मैं न मुर्गी हूँ, न बगुला और न बीज खानेवाला कोई और पक्षी। मैं तो सारस हूँ। खेतीको हानि पहुँचानेवाले कीड़ोंको मैं खा जाता हूँ। मुझे छोड़ दीजिये।'

किसान क्रोधमें भरा था। वह बोला—'तुम कहते तो ठीक हो, किंतु आज तुम उन्हीं चिड़ियोंके साथ पकड़े गये हो, जो

मेरे बीज खा जाया करती हैं। तुम भी उन्हींके साथी हो। तुम इनके साथ आये हो तो इनके साथ दण्ड भी भोगो।'

जो जैसे लोगोंके साथ रहता है, वह वैसा ही समझा जाता है। बुरे लोगोंके साथ रहनेमें बुराई न करनेवालोंको भी दण्ड और अपयश मिलता है। उपद्रवी चिड़ियोंके साथ आनेसे सारसको भी बन्धनमें पड़ना पड़ा।

२४ सारसकी शिक्षा

एक गाँवके पास एक खेतमें सारस पक्षीका एक जोड़ा रहता था। वहीं उनके अंडे थे। अंडे बढ़े और समयपर उनसे बच्चे निकले। लेकिन बच्चोंके बड़े होकर उड़नेयोग्य होनेसे पहले ही खेतकी फसल पक गयी। सारस बड़ी चिन्तामें पड़े। किसान खेत काटने आवे, इससे पहले ही बच्चोंके साथ उसे वहाँसे चले जाना चाहिये पर बच्चे उड़ सकते नहीं थे। सारसने बच्चोंसे कहा—'हमारे न रहनेपर यदि कोई खेतके पास आवे तो उसकी बात सुनकर याद रखना।'

एक दिन जब सारस चारा लेकर शामको बच्चोंके पास लौटा तो बच्चोंने कहा—'आज किसान आया था। वह खेतके चारों ओर घूमता रहा। एक-दो स्थानोंपर खड़े होकर देरतक खेतको घूरता था। वह कहता था कि खेत अब काटने-योग्य हो गया। आज चलकर गाँवके लोगोंसे कहूँगा कि वे मेरा खेत कटवा दें।'

सारसने कहा—'तुमलोग डरो मत। खेत अभी नहीं कटेगा। अभी खेत कटनेमें देर है।'

कई दिन पीछे जब एक दिन सारस शामको बच्चोंके पास आया तो बच्चे बहुत घबड़ाये थे। वे कहने लगे—'अब हमलोगोंको यह खेत झटपट छोड़ देना चाहिये। आज किसान

फिर आया था। वह कहता था कि गाँवके लोग बड़े स्वार्थी हैं। वे मेरा खेत कटवानेका कोई प्रबन्ध नहीं करते। कल मैं अपने भाइयोंको भेजकर खेत कटवा लूँगा।

सारस बच्चोंके पास निश्चिन्त होकर बैठा और बोला— 'अभी तो खेत कटता नहीं। दो-चार दिनमें तुमलोग ठीक-ठीक उड़ने लगोगे। अभी डरनेकी आवश्यकता नहीं है।'

कई दिन और बीत गये। सारसके बच्चे उड़ने लगे थे और निर्भय हो गये थे। एक दिन शामको सारससे वे कहने

लगे—'यह किसान हमलोगोंको झूठ-मूठ डराता है।' इसका खेत तो कटेगा नहीं। वह आज भी आया था और कहता था कि 'मेरे भाई मेरी बात नहीं सुनते। सब बहाना बनाते हैं। मेरी फसलका अन्न सूखकर झर रहा है। कल बड़े सबेरे मैं आऊँगा और खेत काटूँगा।'

सारस घबड़ाकर बोला—'चलो! जल्दी करो! अभी अँधेरा नहीं हुआ है। दूसरे स्थानपर उड़ चलो। कल खेत अवश्य कट जायगा।'

बच्चे बोले—'क्यों? इस बार खेत कट जायगा, यह कैसे?'

सारसने कहा—'किसान जबतक गाँववालों और भाइयोंके भरोसे था, खेतके कटनेकी आशा नहीं थी। जो दूसरोंके भरोसे कोई काम छोड़ता है, उसका काम नहीं होता। लेकिन जो स्वयं काम करनेको तैयार होता है, उसका काम रुका नहीं रहता। किसान जब स्वयं कल खेत काटनेवाला है, तब तो खेत कटेगा ही।'

अपने बच्चोंके साथ सारस उसी समय वहाँसे उड़कर दूसरे स्थानपर चला गया।

उपकारका बदला

एक बार एक सिंहके पैरमें मोटा बड़ा काँटा चुभ गया। सिंहने दाँतसे बहुत नोचा; किंतु काँटा निकला नहीं। वह लँगड़ाता हुआ एक गड़रियेके पास पहुँचा। अपने पास सिंहको आते देख गड़रिया बहुत डरा। लेकिन वह जानता था कि भागनेसे सिंह दो ही छलाँगमें उसे पकड़ लेगा। पासमें कोई पेड़ भी नहीं था कि गड़रिया उसपर चढ़ जाय। दूसरा कोई उपाय न देखकर गड़रिया वहीं चुपचाप बैठ गया।

सिंह न गरजा, न गुर्राया। वह गड़रियेके सामने आकर बैठ गया और अपना पैर उसने गड़रियेके आगे कर दिया।

गड़रियेने समझ लिया कि सिंह उसकी सहायता चाहता है। उसने सिंहके पैरसे काँटा निकाल दिया। सिंह जैसे आया था वैसे ही जंगलकी ओर चला गया।

कुछ दिनों पीछे राजाके यहाँ चोरी हुई। कुछ लोगोंने शत्रुताके कारण झूठ-मूठ यह बात राजासे कह दी कि गड़रिया चोर है। उसीने राजाके यहाँ चोरी की है। गड़रिया पकड़ा गया। उसके घरमें चोरीकी कोई वस्तु नहीं निकली। राजाने समझा कि इसने चोरीका सामान छिपा दिया है। इसलिये उन्होंने गड़रियेको जीवित सिंहके सामने छोड़नेकी आज्ञा दे दी।

संयोगसे गड़रियेको मारनेके लिये वही सिंह पकड़ा गया, जिसके पैरका काँटा गड़रियेने निकाला था। जब गड़रिया सिंहके सामने छोड़ा गया, सिंहने उसे पहचान लिया। वह गड़रियेके पास आकर बैठ गया और कुत्तेके समान पूँछ हिलाने लगा।

राजाको बड़ा आश्चर्य हुआ। पूछनेपर जब उन्हें उपकारी गड़रियेके साथ सिंहकी कृतज्ञताका हाल ज्ञात हुआ, तब उन्होंने गड़रियेको छोड़ दिया।

सिंह-जैसा भयानक पशु भी अपनेपर उपकार करनेवालेका उपकार नहीं भूलता। मनुष्य होकर जो किसीका उपकार भूल जाते हैं, वे तो पशुसे भी गये-बीते हैं।

२६ छली गधा

गधा एक था चरता वनमें।

बड़ा कपट था उसके मनमें॥

कहीं सिंहका चमड़ा पाया।

उससे उसने रूप बनाया॥

सबको डर दिखलाता था वह।

अच्छे मजे उड़ाता था वह॥

चर जाता था सबके खेत।

सब डरते थे उसको देख॥

कहता था—'मैं वनका राजा।'

खूब हुआ था मोटा ताजा॥

वन-पशुओंको आँख दिखाता।

सबपर जमकर रोब जमाता॥

रात एक उजियाली आयी।

खूब गधेके मनमें भायी॥

चरने लगा खेतमें जाकर।

रखवाले सब भागे डरकर॥

कोई गधा कहीं चिल्लाया।

बस, इसने भी कान उठाया॥

लगा रेंकने मुख ऊपर कर।
भेद खुल गया उसका सबपर॥
रखवालोंने लट्ठ उठाया।
मार मारकर खूब छकाया॥
जो देता औरोंको धोखा।
वह पाता ऐसा फल चोखा॥

लालची बंदर

एक बंदर एक मनुष्यके घर प्रतिदिन आता था और ऊधम करता था। वह कभी कपड़े फाड़ देता, कभी कोई बर्तन उठा ले जाता और कभी बच्चोंको नोच लेता। वह खाने-पीनेकी वस्तुएँ ले जाता था, इसका दुःख उन घरवालोंको नहीं था; किंतु उस बन्दरके उपद्रवसे वे तंग आ गये थे।
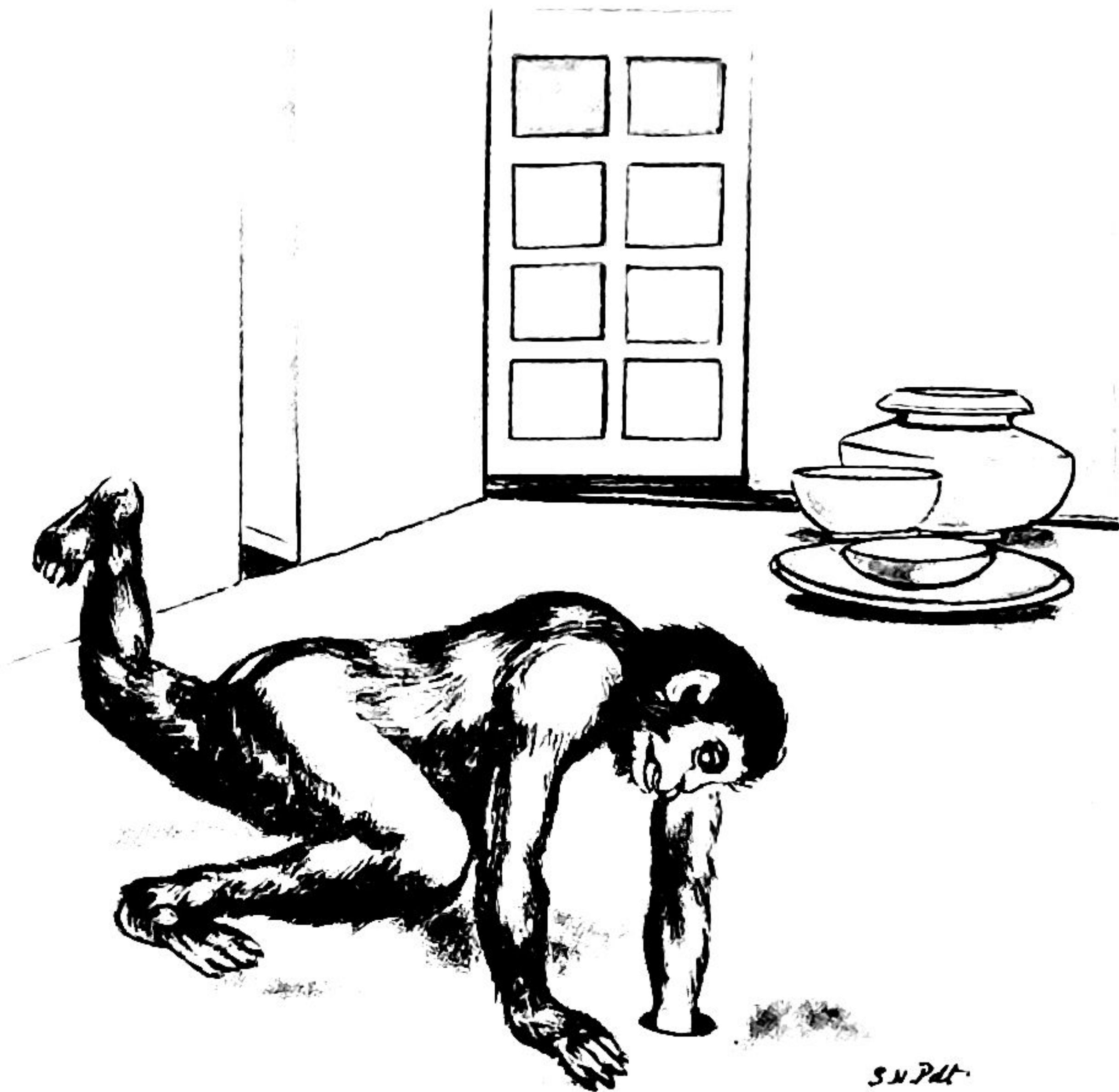
एक दिन घरके स्वामीने कहा—'मैं इस बंदरको पकड़कर बाहर भेज दूँगा।' उसने एक छोटे मुँहकी हाँड़ी मँगायी और

उसमें भुने चने डालकर हाँड़ीको भूमिमें गाड़ दिया। केवल हाँड़ीका मुँह खुला हुआ था। सब लोग वहाँसे दूर चले गये।

वह बंदर घरमें आया। थोड़ी देर इधर-उधर कूदता रहा। जब उसने गड़ी हुई हाँड़ीमें चने देखे तो हाँड़ीके पास आकर बैठ गया। चने निकालनेके लिये उसने हाँड़ीमें हाथ डाला और मुट्ठीमें चने भर लिये। हाँड़ीका मुँह छोटा था। उसमेंसे बँधी मुट्ठी निकल नहीं सकती थी। बंदर मुट्ठी निकालनेके लिये जोर लगाने और कूदने लगा। वह चिल्लाया और उछला, किन्तु लालचके मारे मुट्ठीके चने उसने नहीं छोड़े।

बंदरको घरके स्वामीने रस्सीसे बाँध लिया और बाहर भेज दिया। चनोंके लालच करनेसे बंदर पकड़ा गया। इसीसे कहावत है—'लालच बुरी बला है।'

लालची कुत्ता

एक कुत्ता मुखमें रोटीका टुकड़ा लिये कहीं जा रहा था। बीचमें पानी पड़ता था। पानी गहरा नहीं था। कुत्ता जब पानीमें होकर चलने लगा, तब उसे पानीमें अपनी परछाईं दिखायी पड़ी।
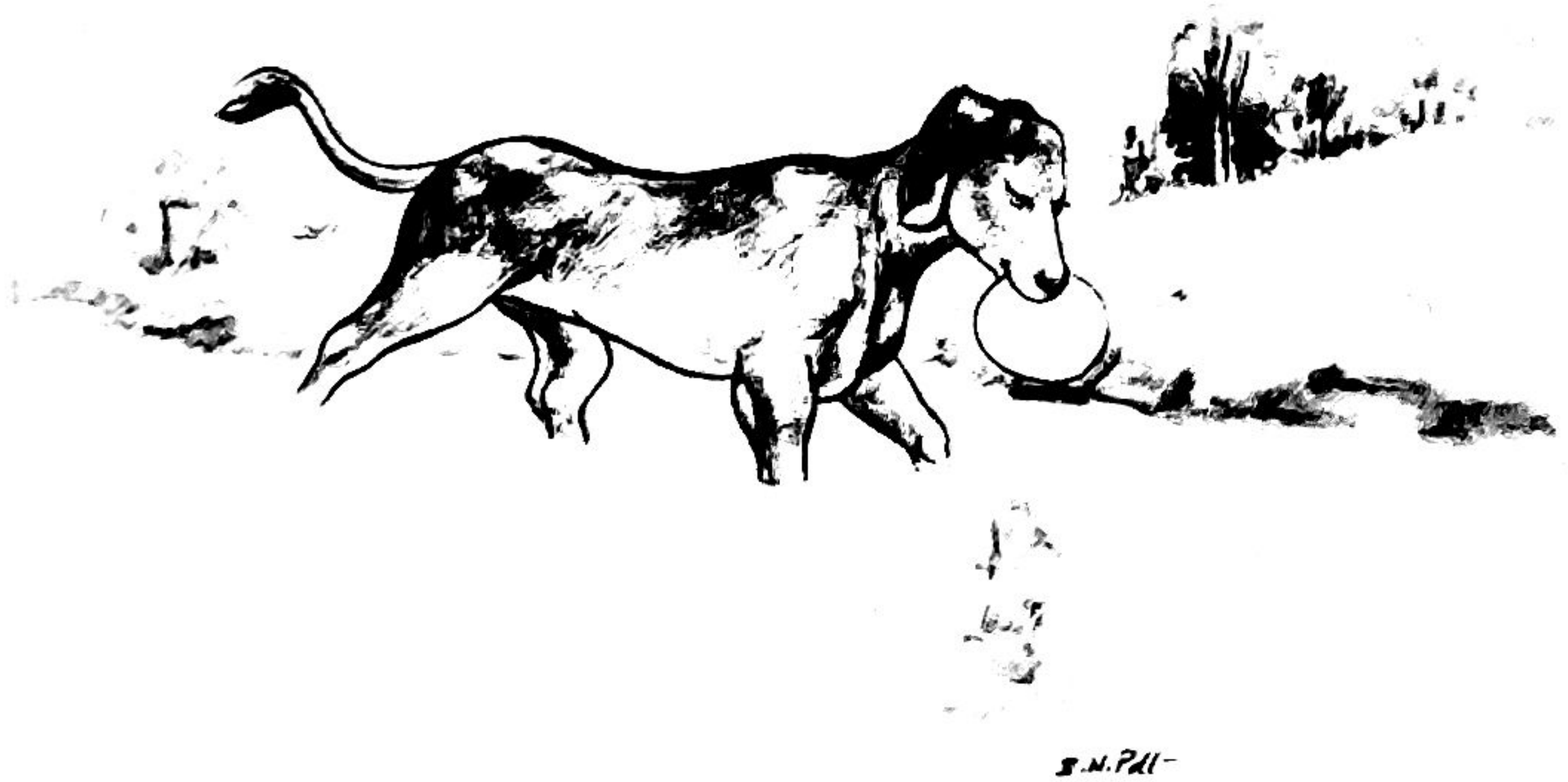
कुत्तेने सोचा—'पानीमें दूसरा कुत्ता रोटी लिये जा रहा है। मैं इसकी रोटी छीन लूँ तो मेरे पास पूरी रोटी हो जायगी।'

कुत्तेने जैसे ही परछाईंवाले कुत्तेकी रोटी छीननेके लिये मुँह खोला, उसके मुखकी रोटी पानीमें गिर गयी। वह अपना-सा मुँह लेकर रह गया।

आधी छोड़ पूरीको धावै। आधी रहै न पूरी पावै॥

बिल्ली और बंदर

एक गाँवमें दो बिल्लियाँ रहती थीं। वे आपसमें मेलसे रहती थीं। उन्हें जो कुछ मिलता था, उसे आपसमें बाँटकर खाया करती थीं। एक दिन उन्हें एक रोटी मिली। उसे बराबर-बराबर बाँटते समय उनमें झगड़ा हो गया। एक कहती थी कि तुम्हारी रोटीका टुकड़ा बड़ा है और दूसरी कहती थी कि मेरा टुकड़ा बड़ा नहीं है।

जब दोनों आपसमें ठीक बँटवारा नहीं कर सकीं तो एक बंदरके पास गयीं। उन्होंने बंदरको अपना पंच बनाया। बंदरने एक तराजू मँगाया और रोटीके दोनों टुकड़े एक-एक पलड़ेमें रख दिये। तौलते समय जो टुकड़ा भारी हुआ, उसमेंसे उसने थोड़ी-सी रोटी तोड़कर अपने मुँहमें

आपसी लड़ाईका फल
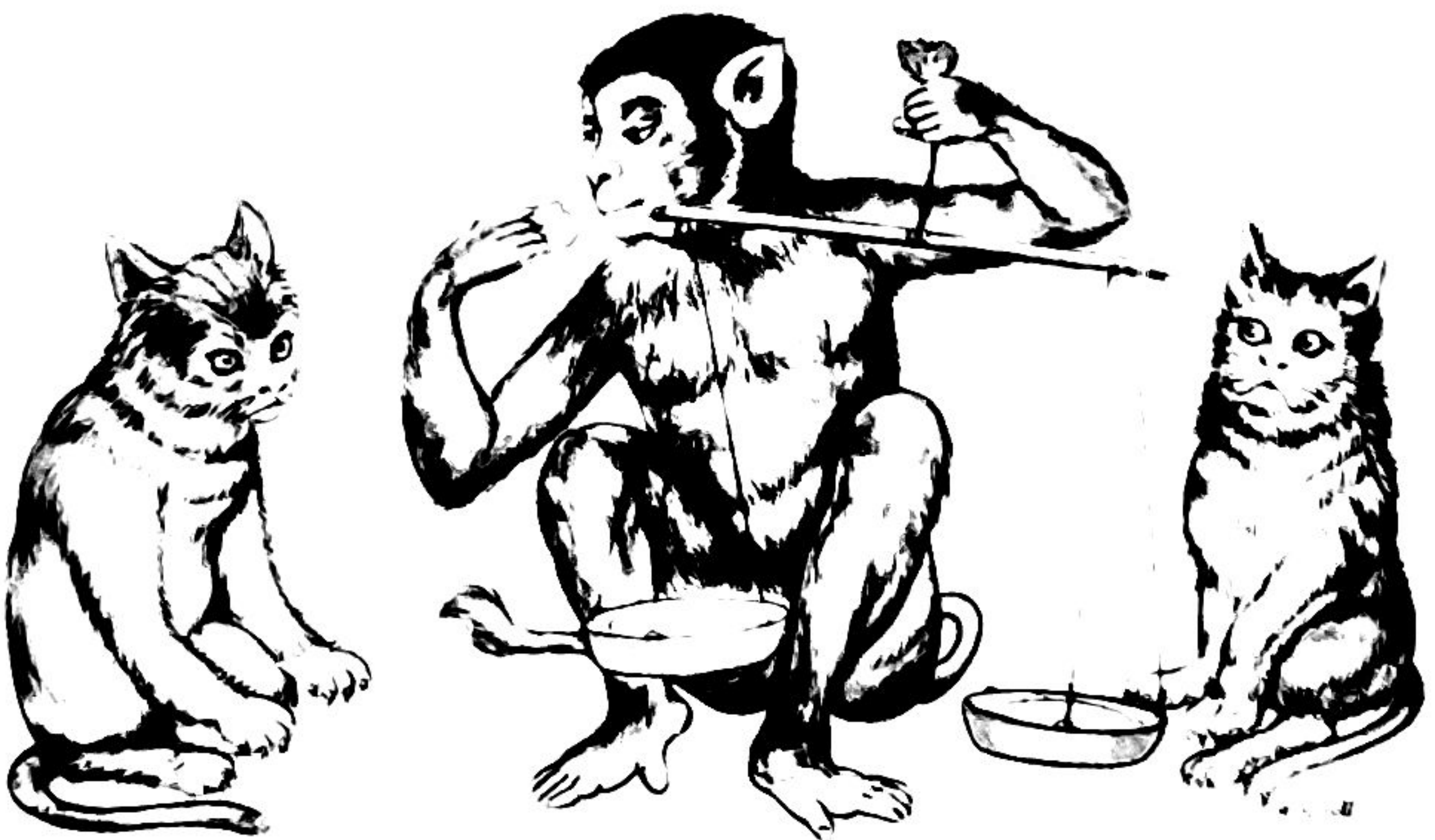
किसी जंगलमें एक शेर और एक चीता रहता था। वैसे तो शेर बहुत बलवान् होता है; किंतु वह शेर बूढ़ा हो गया था। उससे दौड़ा कम जाता था। चीता मोटा और बलवान् था। इतनेपर भी चीता बूढ़े शेरसे डरता था और उससे मित्रता रखता था; क्योंकि बूढ़ा होनेपर भी शेर चीतेसे तो कुछ अधिक बलवान् था ही।

एक बार कई दिनोंतक शेर और चीतेमेंसे किसीको कोई शिकार नहीं मिला। दोनों बहुत भूखे थे। उन्होंने देखा कि एक छोटा-सा हिरन पासमें ही चर रहा है। चीतेने शेरसे कहा—'मैं हिरनको पकड़ता हूँ। लेकिन आप उस नालेके ऊपर बैठ जायँ, जिससे हिरन नालेमें भागकर छिप न सके।'

शेर नालेपर बैठ गया। चीतेने हिरनको दौड़कर पकड़ लिया और मार डाला। लेकिन हिरन बहुत छोटा था। उससे दोमेंसे किसी एककी ही भूख मिट सकती थी। दोनों भूखे थे, इसलिये दोनोंके मनमें लालच आया। चीता कहने लगा—'हिरनको मैंने अकेले मारा है, इसलिये मैं ही खाऊँगा।'

शेर बोला—'मैं जंगलका राजा हूँ। हिरन मैं खाऊँगा। तुम तो दौड़ सकते हो, दौड़कर दूसरा शिकार पकड़ो।'

दोनोंका झगड़ा बढ़ गया। वे आपसमें दाँत और पंजोंसे

लड़ने लगे। झाड़ीमें छिपा एक सियार यह सब बातें देख रहा था, जब शेर और चीतेने एक-दूसरेको पंजों और दाँतोंसे बहुत घायल कर दिया और दोनों भूमिपर गिर पड़े तो सियार झाड़ीसे निकला। वह हिरनको घसीटकर झाड़ीमें ले गया और

खाने लगा। शेर और चीतेमेंसे कोई भी उठ नहीं सकता था। वे देखते ही रह गये।

जब दो व्यक्ति किसी वस्तुके लिये लड़ने लगते हैं तो उन दोनोंकी हानि होती है। लाभ तो कोई तीसरा ही उठाता है। इसलिये आपसमें लड़ना नहीं चाहिये। कुछ हानि भी हो तो उसे सहकर मेलसे ही रहना चाहिये।

३१ झूठ बोलनेका फल
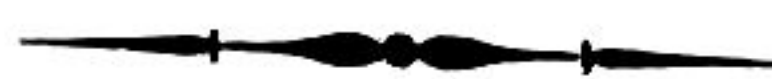
एक गड़रियेका था बाल।

बड़ी बुरी थी उसकी चाल॥

भेंड़ चराने जंगल जाता।

झूठ-मूठ वह था चिल्लाता॥

'दौड़ो अरे भेड़िया आया।

उसने मेरी भेड़ उठाया'॥

लोग दौड़कर थे जब आते।

उसे मजेसे हँसते पाते॥

सचमुच एक भेड़िया आया।
तब वह मूर्ख बहुत चिल्लाया॥
पर उसको सब झूठा जान।
रहे बैठ बिलकुल चुप ठान॥
भेंड़ भेड़िया लेकर भागा।
पछताया वह बाल अभागा॥
झूठ बोलते हैं जो बच्चे।
लोग न कहते उनको अच्छे॥
हैं खोते सबका विश्वास।
पछताते सब खोकर आस॥

कछुआ और खरगोश

तुमने खरगोश देखा होगा, खरगोश भूरे और सफेद होते हैं। दूसरे भी कई रंगोंके खरगोश पाये जाते हैं। कुछ लोग पालते भी हैं। खरगोशको संस्कृतमें शशक कहते हैं। खरगोश बहुत छोटा जानवर होनेपर भी दौड़नेमें बहुत तेज होता है।

एक बार एक खरगोश बहक रहा था—'मैं बहुत अच्छी चौकड़ी मारता हूँ। मुझसे तेज संसारमें और कोई दौड़ नहीं सकता।'

वहीं एक कछुआ पड़ा था। कछुएने कहा—'भाई! तुम बहुत तेज दौड़ते हो, यह बात तो ठीक है; लेकिन किसीको घमंड नहीं करना चाहिये। घमंड करनेसे लज्जित होना पड़ता है।'

खरगोशने कहा—'मैं अपनी झूठी बड़ाई तो करता नहीं। अपने सच्चे गुणको कहनेमें क्या दोष है? तू रेंगता हुआ कीड़ेकी चाल चलता है, इसीलिये मेरा गुण सुनकर तुझे डाह होती है।'

जब खरगोश कछुएको बहुत चिढ़ाने लगा तो कछुएने कहा—'आपको अपनी चालका घमंड है तो आइये, हमारी-आपकी दौड़ हो जाय। देखें कौन जीतता है!'

खरगोशने खूब दूर दीखनेवाले एक पेड़को बताकर कहा—'अच्छी बात है, चलो, उस पेड़के पास जो पहले पहुँचेगा, वही जीता माना जायगा।'

खरगोशने सोचा कि बेचारा कछुआ रेंगता चलेगा। वह पेड़से चार हाथ दूर रह जाय और तब मैं यहाँसे चलूँ, तो भी चौकड़ियाँ भरूँगा और उससे आगे पहुँच जाऊँगा। उसने कछुएसे कहा—'तुम तो सुस्त हो, धीरे-धीरे चलोगे, अभी चल पड़ो। मैं थोड़ी देरमें आता हूँ।

कछुआ बोला—'दौड़ तो अभीसे आरम्भ मानी जायगी। आपके मनमें आवे तब चलें।

खरगोशने कछुएकी बात मान ली। कछुआ धीरे-धीरे रेंगता हुआ चल पड़ा। खरगोशने सोचा—'यह तो बहुत देरमें पेड़तक पहुँचेगा। तबतक मैं आराम कर लूँ।' वह वहीं लेट गया और सो गया। नींद आ जानेपर उसे पता ही नहीं लगा कि कितनी देर पड़ा-पड़ा सोता रहा। जब उसकी नींद टूटी और दौड़ता हुआ पेड़के पास पहुँचा तो देखता है कि कछुआ वहाँ पहलेसे पहुँच गया है। खरगोश लज्जित हो गया। उसने स्वीकार किया कि घमंड करना बुरा होता है।

'घमंडीका सिर नीचा, घमंड करनेवाले और कामको टालनेवाले सदा असफल और अपमानित होते हैं। सफलता और सम्मान उनको ही मिलता है, जो धैर्यपूर्वक काममें लगे रहते हैं।'

कुत्तेकी भूल
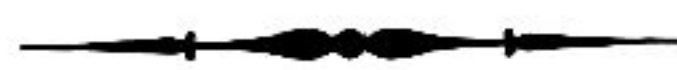
एक कुत्तेको पक्षियोंके अंडे खा जानेका अभ्यास हो गया। वह खेतकी मेड़ों और नदीके किनारे घूमा करता और टिटिहरीके अंडे देखते ही खा जाया करता था। नदी-किनारेकी रेतमें वह कछुएके अंडे ढूँढ़ा करता था।

एक दिन रेतमें पड़ा एक घोंघा कुत्तेने देखा। उसे भी कोई अंडा समझकर वह झटपट निगल गया। घोंघेकी सीपके टुकड़े कुत्तेके पेटमें जाकर उसकी आँतोंमें चुभने लगे। वह दर्दके मारे छटपटाने लगा। अब वह रोता-रोता कहने

लगा—'मुझसे बड़ी भूल हुई। अब मैं समझा कि सब गोल वस्तुएँ अंडा नहीं होतीं।'

जो नासमझ लड़के बिना जाने कोई भी वस्तु मुँहमें डाल लेते हैं, उन्हें इसी प्रकार कष्ट होता है। इसलिये जबतक यह न जान लो कि कोई वस्तु खानेयोग्य है या नहीं, उसे मुखमें मत डालो।

३४ सच्चे हिरन

पुराणमें एक बहुत सुन्दर कथा आती है। एक जंगलमें एक तालाब था। उस जंगलके पशु उसी तालाबमें पानी पीने आया करते थे। एक दिन एक शिकारी उस तालाबके पास आया। उसने तालाबमें हाथ-मुँह धोकर पानी पिया। शिकारी बहुत थका था और कई दिनका भूखा था। उसने सोचा—'जंगलके पशु इस तालाबके पास पानी पीने अवश्य आयेंगे। यहाँ मुझे सरलतासे शिकार मिल जायगा।' तालाबके पास एक बेलके पेड़पर चढ़कर वह बैठ गया।

एक हिरनी थोड़ी देरमें तालाबमें पानी पीने आयी। शिकारीने हिरनीको मारनेके लिये धनुषपर बाण चढ़ाया। हिरनीने शिकारीको बाण चढ़ाते देख लिया। वह बोली—'भाई शिकारी! मैं जानती हूँ कि अब मैं भागकर तुम्हारे बाणसे बच नहीं सकती; किंतु तुम मुझपर दया करो। मेरे दो छोटे-छोटे बच्चे मेरा रास्ता देखते होंगे। तुम मुझे थोड़ी देरकी छुट्टी दे दो। मैं तुम्हें वचन देती हूँ कि अपने बच्चोंको दूध पिलाकर और उन्हें अपनी सहेली हिरनीको सौंपकर तुम्हारे पास लौट आऊँगी।'

शिकारी हँसा। उसे यह विश्वास नहीं हुआ कि यह हिरनी प्राण देने फिर उसके पास लौटेगी। लेकिन उसने सोचा—'जब यह इस प्रकार कहती है तो इसे छोड़ देना चाहिये। मेरे भाग्यमें होगा तो मुझे दूसरा शिकार मिल जायगा।' उसने

हिरनीको चले जाने दिया।

थोड़ी देरमें वहाँ बड़ी सींगोंवाला सुन्दर काला हिरन पानी पीने आया। शिकारीने जब उसे मारनेके लिये धनुषपर बाण चढ़ाया तो हिरनने देख लिया और बोला—'भाई शिकारी! अपनी हिरनी और बच्चोंसे अलग हुए मुझे देर हो गयी है। वे सब घबरा रहे होंगे। मैं उनके पास जाकर उनसे मिल लूँ और उन्हें समझा दूँ, तब तुम्हारे पास अवश्य आऊँगा। इस समय दया करके तुम मुझे चले जाने दो।'

शिकारी बहुत झल्लाया। उसे बहुत भूख लगी थी। लेकिन हिरनको उसने यह सोचकर चले जाने दिया कि मेरे भाग्यमें भूखा ही रहना होगा तो आज और भूखा रहूँगा।

हिरनी अपने बच्चोंके पास गयी। उसने बच्चोंको दूध पिलाया, प्यार किया। फिर अपनी सहेली हिरनीको सब बातें बताकर उसने अपने बच्चे सौंपने चाहे। इतनेमें वहाँ वह हिरन भी आ गया। उसने भी बच्चोंको प्यार किया। बच्चे अपने माता-पितासे अलग होनेको तैयार नहीं होते थे। अन्तमें उनका हठ मानकर हिरन और हिरनीने उन्हें भी साथ ले लिया।

तालाबके पास आकर हिरनने शिकारीसे कहा—'भाई शिकारी! अब हमलोग आ गये हैं। तुम अब हमें अपने बाणोंसे मारो और हमारे मांससे अपनी भूख मिटाओ।'

हिरन और हिरनीकी सच्चाई देखकर शिकारीको बड़ा आश्चर्य हुआ। वह पेड़परसे नीचे उतर आया और बोला—देखो! ये हिरन पशु होकर भी अपनी बातके कितने सच्चे हैं। ये प्राणका मोह छोड़कर सत्यकी रक्षाके लिये मेरे पास आये

हैं। मनुष्य होकर भी मैं कितना नीच और पापी हूँ कि अपना पेट भरने और चार पैसे कमानेके लिये निरपराध पशुओंकी हत्या करता हूँ। अबसे मैं किसी पशुको नहीं मारूँगा।'

शिकारीने अपना धनुष तोड़कर फेंक दिया। उसी समय वहाँ स्वर्गसे एक विमान उतरा। उस विमानको लानेवाले देवदूतने कहा—'शिकारी! ये हिरन सत्यकी रक्षा करनेके कारण निष्पाप हो गये हैं, ये अब स्वर्गको जायँगे। तुमने भी आज इन जीवोंपर दया की, इसलिये तुम भी इनके साथ स्वर्ग चलो।'

हिरन-हिरनी और उनके दोनों बच्चोंका रूप देवताओंके समान हो गया। वह शिकारी भी देवता बन गया। सत्य और दयाके प्रभावसे विमानमें बैठकर वे सब स्वर्ग चले गये।

दूसरेका भरोसा मत करो

एक किसानके पास एक गाय और एक घोड़ा था। वे दोनों एक साथ जंगलमें चरते थे। किसानके पड़ोसमें एक धोबी रहता था। धोबीके पास एक गधा और एक बकरी थी। धोबी भी उन्हें उसी जंगलमें चरनेको छोड़ देता था। एक साथ चरनेसे चारों पशुओंमें मित्रता हो गयी। वे साथ ही जंगलमें आते और शामको एक साथ जंगलसे चले जाते थे।

उस जंगलमें एक खरगोश भी रहता था। खरगोशने चारों पशुओंकी मित्रता देखी तो सोचने लगा—'मेरी भी इनसे मित्रता हो जाय तो बड़ा अच्छा हो। इतने बड़े पशुओंसे मित्रता होनेपर कोई कुत्ता मुझे तंग नहीं कर सकेगा।'

खरगोश उन चारोंके पास बार-बार आने लगा। वह उनके सामने उछलता, कूदता और उनके साथ ही चरता था। धीरे-धीरे चारोंके साथ उसकी मित्रता हो गयी। अब खरगोश बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने समझा कि कुत्तोंका भय दूर हो गया।

एक दिन एक कुत्ता उस जंगलमें आया और खरगोशके पीछे दौड़ा। खरगोश भागा-भागा गायके पास गया और बोला—'गोमाता! यह कुत्ता बहुत दुष्ट है। यह मुझे मारने आया है। तुम इसे अपनी सींगोंसे मारो।'

गायने कहा—'भाई खरगोश! तुम बहुत देरीसे आये।

मेरे घर लौटनेका समय हो गया है। मेरा बछड़ा भूखा होगा और बार-बार मुझे पुकारता होगा। मुझे घर जानेकी जल्दी है। तुम घोड़ेके पास जाओ।'

खरगोश दौड़ता हुआ घोड़ेके पास गया और बोला—'भाई घोड़े ! मैं तुम्हारा मित्र हूँ। हम दोनों साथ ही यहाँ चरते हैं। आज यह दुष्ट कुत्ता मेरे पीछे पड़ा है। तुम मुझे पीठपर बैठाकर दूर ले चलो।'

घोड़ेने कहा—'तुम्हारी बात तो ठीक है, किंतु मुझे बैठना आता नहीं। मैं तो खड़े-खड़े ही सोता हूँ। तुम मेरी पीठपर चढ़ोगे कैसे ? आजकल मेरे सुम बढ़ गये हैं। मैं न तो तेज दौड़ सकता हूँ और न पैर फटकार सकता हूँ।'

घोड़ेके पाससे निराश होकर खरगोश गधेके पास गया। उसने गधेसे कहा—'मित्र गधे ! तुम इस पाजी कुत्तेपर एक दुलत्ती झाड़ दो तो मेरे प्राण बच जायँ।'

गधा बोला—'मैं नित्य गाय और घोड़ेके साथ घर लौटता हूँ। वे दोनों जा रहे हैं। यदि मैं उनके साथ न जाकर पीछे रह जाऊँ तो मेरा स्वामी धोबी डंडा लेकर दौड़ा आयेगा और पीटते-पीटते मेरा कचूमर निकाल देगा। मैं अब यहाँ ठहर नहीं सकता।'

अन्तमें खरगोश बकरीके पास गया। बकरीने उसे देखते ही कहा—'खरगोश भाई ! कृपा करके इधर मत आओ। तुम्हारे पीछे कुत्ता दौड़ता चला आ रहा हैं। मैं उससे बहुत डरती हूँ।'

सब ओरसे निराश होकर खरगोश वहाँसे भागा। भागते-भागते वह जाकर एक झाड़ीमें छिप गया। कुत्तेने बहुत ढूँढ़ा; किंतु उसे खरगोशका पता नहीं मिला। जब कुत्ता लौट गया, तब खरगोश झाड़ीमेंसे निकला। उसने चारों ओर देखा और संतोषकी साँस ली, फिर वह बोला—'दूसरोंका भरोसा करना सदा धोखा देता है। अपनी सहायता अपने-आप ही करनी चाहिये।'

मिथ्या गर्वका परिणाम

समुद्रतटके किसी नगरमें एक धनवान् वैश्यके पुत्रोंने एक कौआ पाल रखा था। वे उस कौएको बराबर अपने भोजनसे बचा अन्न देते थे। उनकी जूँठन खानेवाला वह कौआ स्वादिष्ट तथा पुष्टिकर भोजन खाकर खूब मोटा हो गया था। इससे उसका अहंकार बहुत बढ़ गया। वह अपनेसे श्रेष्ठ पक्षियोंको भी तुच्छ समझने और उनका अपमान करने लगा।

एक दिन समुद्रतटपर कहींसे उड़ते हुए आकर कुछ हंस उतरे। वैश्यके पुत्र उन हंसोंकी प्रशंसा कर रहे थे, यह बात कौएसे सही नहीं गयी। वह उन हंसोंके पास गया और उसे उनमें जो सर्वश्रेष्ठ हंस प्रतीत हुआ, उससे बोला—'मैं तुम्हारे साथ प्रतियोगिता करके उड़ना चाहता हूँ।'

हंसोंने उसे समझाया—'भैया! हम तो दूर-दूर उड़नेवाले हैं। हमारा निवास मानसरोवर यहाँसे बहुत दूर है। हमारे साथ प्रतियोगिता करनेसे तुम्हें क्या लाभ होगा। तुम हंसोंके साथ कैसे उड़ सकते हो?'

कौएने गर्वमें आकर कहा—'मैं उड़नेकी सौ गतियाँ जानता हूँ और प्रत्येकसे सौ योजनतक उड़ सकता हूँ।' उड्डीन, अवडीन, प्रडीन, डीन आदि अनेकों गतियोंके नाम गिनाकर वह बकवादी कौआ बोला—'बतलाओ, इनमेंसे तुम किस गतिसे उड़ना चाहते हो?'

तब श्रेष्ठ हंसने कहा—'काक! तुम तो बड़े निपुण हो। परंतु मैं तो एक ही गति जानता हूँ, जिसे सब पक्षी जानते हैं। मैं उसी गतिसे उड़ूँगा।'

गर्वित कौएका गर्व और बढ़ गया। वह बोला—'अच्छी बात, तुम जो गति जानते हो उसीसे उड़ो।'

उस समय कुछ पक्षी वहाँ और आ गये थे। उनके सामने ही हंस और कौआ दोनों समुद्रकी ओर उड़े। समुद्रके ऊपर आकाशमें वह कौआ नाना प्रकारकी कलाबाजियाँ दिखाता पूरी शक्तिसे उड़ा और हंससे कुछ आगे निकल गया। हंस अपनी स्वाभाविक मन्द गतिसे उड़ रहा था। यह देखकर दूसरे कौए प्रसन्नता प्रकट करने लगे।

थोड़ी देरमें ही कौएके पंख थकने लगे। वह विश्रामके लिये इधर-उधर वृक्षयुक्त द्वीपोंकी खोज करने लगा। परंतु उसे

उस अनन्त सागरके अतिरिक्त कुछ दीख नहीं पड़ता था। इतने समयमें हंस उड़ता हुआ उससे आगे निकल गया था। कौएकी गति मन्द हो गयी। वह अत्यन्त थक गया और ऊँची तरंगोंवाले भयंकर जीवोंसे भरे समुद्रकी लहरोंके पास गिरनेकी दशामें पहुँच गया।

हंसने देखा कि कौआ बहुत पीछे रह गया है तो रुक गया। उसने कौएके समीप आकर पूछा—'काक! तुम्हारी चोंच और पंख बार-बार पानीमें डूब रहे हैं। यह तुम्हारी कौन-सी गति है?'

हंसकी व्यंगभरी बात सुनकर कौआ बड़ी दीनतासे बोला—'हंस! हम कौए केवल काँव-काँव करना जानते हैं। हमें भला दूरतक उड़ना क्या आये। मुझे अपनी मूर्खताका दण्ड मिल गया। कृपा करके अब मेरे प्राण बचा लो।'

जलसे भीगे, अचेत और अधमरे कौएपर हंसको दया आ गयी। पैरोंसे उसे उठाकर हंसने पीठपर रख लिया और उसे लादे हुए उड़कर वहाँ आया जहाँसे दोनों उड़े थे। हंसने कौएको उसके स्थानपर छोड़ दिया।

डाल ली। अब वह टुकड़ा छोटा हो गया और दूसरा टुकड़ा भारी होने लगा। बंदरने उस टुकड़ेमेंसे थोड़ी रोटी तोड़कर खा ली। इस प्रकार बारी-बारीसे दोनों टुकड़ोंमेंसे थोड़ी-थोड़ी रोटी तोड़कर बार-बार खाने लगा।

जब रोटीका बहुत भाग बंदरने खा लिया और दोनों टुकड़े बहुत छोटे-छोटे रह गये, तब बिल्लियाँ घबरायीं। उन्होंने बंदरसे कहा—'अब आप कष्ट न करें। हमलोग आपसमें ही बँटवारा कर लेंगी।'

बंदर बोला—'मैंने इतना परिश्रम किया है, मुझे भी तो कुछ मजदूरी चाहिये।' यह कहकर दोनों बचे टुकड़े उसने मुँहमें भर लिये और 'हुप्', 'हुप्' करके बिल्लियोंको डराकर भाग गया।

दोनों बिल्लियाँ बहुत पछतायीं और कहने लगीं—'आपसकी फूट बहुत बुरी है।'